

नन्दरानी स्या अन्य एकांक

श्री शम्भुयान सकसेमा

नवयुग ग्रथ कुटीर
श्रीकानेर

प्रकाशक नरपुंगव चण्ड मुनीर बीकानेर
मुद्रक एडुवेचनन प्रेस बीकानेर
वर्ष १ ११ नए बीके

सूची

मन्दराती	
बामप्रहस	१
बीबरबारिणी	१५
सास का घर	४६
हठ	७१
पञ्चवटी	८३
	१०७

एभवाकास
घम्रीस १९४२

नंदरानी

पात्र

मंजरानी

नंद महर की स्त्री यशोदा

स्मृति पात्र

नव

गोबुस ग्राम के मुगिया, नंदरानी के पति

देवकी

यमुदेव की स्त्री

वृष्ण

नंदरानी के वीर्यपुत्र

राधा

वृष्ण की सती

ऊयो

वृष्ण के सहा

पतिव, सहा आदि

गोकुल ग्राम नंद महर का कष्ट
सायंकाल

सामने दूसरे चित्र पर एक तारा मस्तकसा रहा है। मंदरानी उस पर हृष्टि मढ़ाये चुपचाप बैठी है। घर में बाहर भीतर सब अण्ड दृश्यता था रही है। योकुल मांभ सर्वत्रभ्यापी दृश्यता में बूब-सा रहा है। जसकी कल्पना में मुम्बर घटीत के एक प्रजात की सदि होती है। पर्व-ननल बनुना का तद। बी लक्षिर्षी का प्रेम मिलन। बुधसशेम संमापण।

मंदरानी

बहिन तेरे मुसड़े पर यह विपाद की छाया कैसे गहरी हो रही है ?

बेबकी

मेरे विपाद की कृपा न पूछने की है न कहने की, बहिन।

मंदरानी

मुझ से तेरा क्या छिनाव है ? कोई दूसरी बात हमारे बीच नहीं हो सकती।

नं रा १

बैवकी

यह क्या मैं नहीं जानती परन्तु --

मंजरानी

फिर परन्तु क्या, भोली । अपने जो की बात मुझे बता लो सही ।

बैवकी

बड़ी सज्जा की बात है । बड़े दुःख की बात है । उसे बहने से
।ई साम नहीं है बहना ।

मंजरानी

तब तू मेरी सगी नहीं ।

बैवकी

क्यों ?

मंजरानी

तू दुराय रगती है । अपने रामकनी लो अपने दुःख-दर में
अपनी बहिन से छिपाव म करती ?

बैवकी

यह बात नहीं है ।

मंजरानी

फिर क्या बात है ?

बैवकी

--- बात को मुनाबर में जानो पहिल से दुःख को मदारेंगी ही,

यह जानते हुए भी मैं उसे कैसे सुनाऊ ? फिर इतने बड़े कलंक की बात !

नंबरानी

सभी तो मुझे सुना बहिन । दुस्र ओर कलंक का इतना बड़ा बोझ मैं मुझे प्रकसे ढोने नहीं दूंगी । तेरा सुर्वस घरोर ।

देवकी

मैं सुनाऊँ तो तू मुझे पूणा से दुरदुरा देगी । तेरे स्नेह की निधि को पीने का जोसम कैसे उठाऊँ भला ?

नंबरानी

जिसे मैंने जमुना को साक्षी करके राखी माना है सूर्य और चंद्र जिस बहिमापे के गवाह हैं वह क्या यों दूट सकता है, भोली !

देवकी

जसोरा जोबो तेरा हठ । उसके प्रागे क्या मेरा व्रत ठहर सकता है ? से सुन । (मुह पोका घावे करके इत प्रफार कहती है कि जसोरा के तिबा कोई ओर न मुन पावे ।) मेरा मुह देखना पाप है नंबरानी । मैं पुत्रप्राप्तिनी हूँ । मैं प्रपत्नी सतति को प्राप ही रा जाती हूँ ।

नंबरानी

(अचरज में भरकर) यह तू क्या कहती है देवकी ?

बैबकरी

मैं सत्य कहती हूँ नंदरानी । मैं माँ नहीं रादासी हूँ । अपने
 इन्हीं हाथों से मैंने एक नहीं अपने साथ कूल से बच्चों का बलिदान
 किया है । उनका गला घोंटा है । माँ के दूध की एक बूँद भी उनके
 गले में नहीं उतरने दी है । उनका बहु तड़पना उनका बहु छटपटाना,
 उनका यह रदन ! घोष ! उस महाभाग से मेरा मुदरन रूप कासा
 पड़ गया है । मेरी मारान छो देह कोयसा हो गई है । घात्र सोया या
 पद-स्नान क यहाने जमुना मैया की मोर में विद्याम सेबर इन
 नारकी जोषन का घन्ट कर दू गो । पाप के भार को घब घोर
 घषिष नहीं डोऊँगी ।

अन्त में मु ह दिया कर तिलकनी है ।

नररानी

(बैबकी को अपनी घोर पीठ कर दाती से सया लेती है) बड़ना
 घरी कोवसिया । मैं सरी यात गमभन में घगमध हूँ । मुझे मगना है
 कि घरती घरे पावों के नीचे स सरब रही है घोर जमना का प्रवाह
 जग का तहाँ जमा जा रहा है ।

बैबकी

छोड़ दे, मुझे मत लूँ नंदरानी । पुण्य गगोवर की रात्रतिनी
 मेसे कर्षिनी छाया स बूर होत्रा ।

उनकी भुजाओं से घाने की मुत्त काँधे का घान
 करती है ।

नंदरानी

दुस्तिपारी वहिन, मुझसे सनिक साफ साफ कह ! तो क्या यह सब नहीं है कि भाई कंस का कोप तेरे संतति-मुक्त को राहु बनकर घस रहा है ? ऐसी ही बर्षा तो रही है ।

देवकी

यह सब व्यर्थ है । हज्जार कंस भी क्या मां से उसके जीते जी, उसकी संतान को छीन सकते हैं ?

नंदरानी

छीनने की मत कह वहिन । घरवाचारी क्या नहीं कर सकता ?

देवकी

यदि मां यक्षमुख मां हो तो कंस ही घरवाचारी उसके सामने उसकी संतान का स्वर्ण नहीं कर सकता । मां के शरीर को बोटी बोटी घसग घस देने के बाद ही वह उसे हाथ लगा सकता है । घोर यही सब मेरी दृष्टि से मेरी स्वीकृति से मेरी धारों के सामने हुआ । यदि मैं मां होती तो प्राणों का मोह छोड़कर उसका विरोध करती । विश्व का कण कण मां के विरोध का साथ देता । हजारों कंस भूम में मिस जाते, - परन्तु मैं मां होती तब न ।

बेवक़ी

मैं सत्य कहती हूँ नंदरानी ! मैं माँ नहीं राखती हूँ । अपने इन्हीं हाथों से मैंने एक नहीं अपने साठ फूल से पत्तों का बसिदान किया है । उसका मला पोंटा है । माँ के बूब की एक बूद भी उनके गसे में नहीं उतरने दी है । उनका वह तड़पना उनका वह छटपटाना, उनका वह रुदन ! धोफ ! उस महापाप से मेरा सुदर्शन रूप काला पड़ गया है । मेरी मासुन सी देह कोयला हो गई है । घाब सोया या पर्व-स्नान के घटाने जमुना मीया की गोम में विद्याम लेकर इस नारकी जीवन का घन्ट कर दूंगी । पाप के भार को घब घीर घपिक नहीं ढोऊँगी ।

अन्धत में मुह दिया कर सिसकती है ।

नंदरानी

(बेवक़ी को अपनी घोर खींच कर छप्पी ले लया लेती है) घडना मेरी कोयसिया ! मैं तेरी बात समझने में असमर्थ हूँ । मुझे लगता है कि घरती मेरे पाँवों के नीचे स सरक रही है घोर अमता का प्रवाह जहाँ का वहाँ जमा जा रहा है ।

बेवक़ी

छोड़ दे, मुझे मत छू नंदरानी । पुण्य सरोवर की रामहंसिनी मेरी पर्सिकिनी घाया से दूर होबा ।

उसकी भुजाओं से अपने को मुक्त करने का मतलब करती है ।

मंदरानी

दुस्वियारी वहिम, मुझसे तनिक साफ साफ कह । तो क्या यह सब नहीं है कि माई कस का कोप तेरे संतति-मुस को राह बनकर प्रस रहा है ? ऐसी ही चर्चा तो रही है ।

बबकी

यह सब व्यर्थ है । हुआच कस भी क्या मां से उसके ओठ जो उसको संतान को छीन सकती हैं ?

मंदरानी

छीनने की मत कह वहिम । धरवाचारी क्या नहीं कर सकता ?

बेवकी

यदि मां मजमूब मां हो तो कौसा ही धरवाचारी उसके सामने उसकी संतान का स्पस नहीं कर सकता । मां के शरीर को छोटी छोटी घसग कर देने के बाद ही वह उसे हाथ मगा सकता है । और यहाँ सब मेरे इच्छा से मेरे स्वीकृति से मेरी धाँसों के सामने हुआ । यदि मैं मां होती तो प्राणों का मोह छोड़कर उसका विरोध करती । बिबब का करण करण मां के विरोध का साथ देता । हुआरों कंस पूस में मिस आते, "परन्तु मैं मां होती तब न ।

८]

नंदरानी

मेरी मैना मेरी सहेली । तेरे दुस को में निपुली क्या समझूँगी ।

बेवकी

प्राणों के मोह से मैंने अपने हृदय के टुकड़ों को एक एक करके दे दिया । मेरे भीतर एक भयानक भाग बचक रही है । प्रतिहिंसा की भाग नहीं । अपने प्रति घृणा की भाग । मैंने दुनिया में माता के आदर को लजाया है । मेरा दुःख मैं बिपथर बनकर भाब मुझे बस रहा है । जिस जीवन का मैंने मोह किया वह भाब परवर की सिंसा बनकर मुझे पीस रहा है ।

नंदरानी

(अपने प्रपन्न से बेवकी के घाँस वॉप्ली हुई) घाँस हो बहिन घाँस हो । तू ने जो कुछ किया है वैबस होकर किया है । तू उसके लिए बोपी नहीं है ।

बेवकी

नंदरानी, अब इस जीवन में सति कहाँ बहिन । सतिमान पाप मेरी घाँसों के सामने लड़ा है । उसके आँठे के नीचे मेरी घदन रखी है । बमुना मैया ही कारण है तो मैं उसके कोप से बच सकती हूँ ।

मंवरानी

तेरी कोख से दिव्य लेब भाँक रहा है । प्रत्याचारी के पाप के प्यासे को तेरे द्वारा भरवाकर ईश्वर तुझे अमर यश देना चाहता है देवकी ! तू मर नहीं सकती जबुता मया तुझे ग्रहण नहीं कर सकती ।

देवकी

मंवरानी क्या कहती हो ! जा महापापक विष्णु का दण्ड मन मुझे पीड़ित कर रहा है उसी का ब्रह्म एव वार भीर चलने वृ ? नहीं जीभी, मरो भाँलें अब यह इश्य नहीं दक्ष सकतीं, मेरा हृदय अब उस पापाचार का नहीं सह सकता । उसे पहले मैं मर भाऊँगी ।

मंवरानी

देवकी विश्व नियन्ता की लीला का आशय किसने समझ है ? इतने दुःख में भाँ तेरे ऊपर बन्धनाथ नहीं करता वो इसमें उसका कोई आशय होना चाहिए ।

देवकी

आहे जो हो बहिन, नो महीने मोह-ममता को अपने भीतर पोस कर, मैं उसी परिणाम क लिए नहीं रत्न सबटी ।

मंवरानी

तो तू प्राण दगो, बहिन !

देवकी

हो प्राण देकर मे माता के वस्तु का पासत करूगी,
नंदरानी । जिससे भय तक बचती रहो है वह वस्तु का पूरा
करूगी ।

नंदरानी

लेकिन देवकी मेरी प्यारी सखी मैं तुम्हे मरने न दूगी । मेरी
कोत देख । बिपना ने शायद इसी हेतु इस प्रबन्ध में अपना यह
प्रसाद दिया है मुझे ।

देवकी

धरे सब नंदरानी समयान तुम्हे पुनबती करे बहिन । नंद महर
की बिरदित की शर्मनापाए पूरी हों, पर तू मेरी बिस्ता न कर
बहिन । मुझ भाग्यहीना के लिए तू अपनी प्राँसों से प्राँसू न बाल ।—
आ आ मेरी छाया से इस समय तेरे दूर रहने की घोर भी शर्षक
प्रावश्यकता है ।

नंदरानी

देवकी मेरी प्रिय महपरी आ आ जो बात मैंने कही है उसे
याद रखना । बसुदब से कह देना वे साकर उनसे मिल सें । वे दोनों
बालमन्ना पाप ही कोई उपाय कर सगे । मनबान मे साहा तो तेरा
यह शिषु बुनिया मे शजर प्रमर रहेगा ।

बेबकी

ऐसा कहीं हुआ है ? जीवन भर के पुण्य संवय का तेरा फल क्या मैं अपने दुर्भाग्य के लिए ले सकती हूँ ?

मंदरानी

याद कर एक दिन तूने कहा था हताश क्यों होती हो मंदरानी । मेरे एक संतान को तूम पास लेना । आ तेरा मावी शिशु भाऊ से लेना हो गया । मेरी धरोहर समय पर मुझे सौंप देनी होगी । इस बात को सुन मठ आता बबकी ।

बेबकी

यदि तेरी धरोहर की मैं रक्षा कर सकी तो उस पर कमी अपना अधिकार नहीं बताऊंगी, मंदरानी ! यदि वह जिया जागा तो मेरे भाग से वहाँ तेरे भाग से जियेगा ।

मंदरानी के कानों में यही पिछले अर्थ गूँजते रह जाते हैं । कल्पना का सूत्र टूट जाता है । वह चौंक कर चारों ओर देखती है । संघ्वा की धुसर छाया रात की कालिमा में बदल गई है । आकाश तारों से अच्युत हो उठा है । पोकुल ग्राम में शून्यता का विस्तार हो जाता है । अनेक नये दृश्य उत्तकी कल्पना में आते और बिलीन होते रहते हैं । उलका कर्मिणा लगी में मुख्य होता है । दृश्य इतनी बस्ती, बस्ती बदलते हैं तो भी वे अभी उतके परिचित हैं । उनकी

राधा

कैसी ?

नंदरानी

तेरे से बधा कहूँ बेनी में । और तेरा बाबा भी तो बेसा ही है ।

राधा

(हम्पठ से) मैं आ रही हूँ कहूँया । मैंने मूस की जो तुम्हारे पर धाई ।

कृष्ण

बवों कठ पई ? या तो हंसी कर रही है । (नंदरानी से) मैसा से बह जा रही है कृष्ण । मैंने कहा था न कि उठे बिदा मत ।

नंदरानी

अरे ओ रो कीरतिकुमारी । (बहका हाथ नकड़ कर) ब मानिनी है । या सब में कुछ न कहूँगी रानी बेटी । तेरी अम्मा । मेरी सहेली होती है ।

राधा को नीर में बिठा लेती है । बहकी बोटी बूध है । प्रत्येक सारी घोड़की रज लेती है । रानी ओड़ घोड़ने की बेती है । नई पपरिया बहनपती है ।

कृष्ण

बस बहुत होगया । अब बस प्रांसमिचीनी सेसेगे ।

दोनों प्रांस के द्वारे कोने में बाहर बिलते हैं । गांध
के घोर लड़के लड़कियाँ भी आजाते हैं ।

नंदरानी

इस राधाकृष्ण की जोड़ी को भगवान ने मानों अपने हाथों से
रखा है । (बाहर बाहर से नंद महर को बुला जाती है । प्रांस के द्वारे से
उन्हें रिखाती है ।) देखो ।

मद

सबमुख नंदरानी । जोड़ी ता बड़ी सुपर है । कन्हैया के पास
राधा बसोटी पर सोने की रेखा सी समती है ।

नंदरानी

बस बसो । नजर न मारो । बिधना को प्यपवार वो जिसने
कन्हैया के लिए राधा को गड़कर भेजा है

नंद

कैसे ही किसी को बरसाने भेजना पड़ेगा ।

नंदरानी

इसमें सोच विचार क्या ? आज ही भेज दो न ।

नंबर

प्राज ही । प्रच्छी बात है प्राज ही मेज दू मा ।
 नंबर का प्रत्यान । कृप्य हुयेली से राया की प्रांछों
 भीचते हैं । प्रांछों के कोनों से बह फिर भी बेचती
 रहती है ।

एक सखा

कन्हैया वह देख रही है ।

दूसरा सखा

प्रांछों ठीक से भीच फांटा ।

कृप्य

इसकी प्रांछों हैं कि प्राम की फांछें ? मेरे हाथों में तो प्राती ही
 नहीं ।

इस बात से नबरानी चौंक पड़ती है । प्याल दूब
 जाता है । फिर यही धंभेरी रात । युगताम गोशुन
 प्राम के अपने कम में प्राकाश की घोर निहारती बह
 फकेली बंदी है । बाहर हुआ बेच से समसमा रही है ।
 वह एक गहरी निरबास लेती है । प्रांछों के सामने
 नये हथ्य प्राते जाते हैं । " राया अब समानी ही पई
 है । कन्हैया भी बड़ा ही पया है । कोनों का प्रेम
 दिन दिन गाढ़ा होना जाता है । बर्र के पुनक घोर

रचनाकाल
मार्ग १९४९

नंदरानी

पात्र

नंदरानी	मंघ महर की स्त्री यशोदा स्मृति पात्र
नब	गोकुल ग्राम के मुखिया नंदरानी के पति
बेबकी	यसुदेव की स्त्री
कृष्ण	नंदरानी के पोष्यपुत्र
राधा	कृष्ण की सखी
ऊषी	कृष्ण के सखा पयिक, सखा प्रादि

दोस्तुत प्राम मंद महर का कद

सायंकाल

तामने बूलर क्षितिज पर एक तारा भ्रममला रहा है । मंदरानी उस पर हृष्टि बढ़ाये चुपचाप बैठी है । घर में बाहर भीतर सब जगह दूम्यता छा रही है । योदुल यांज सर्बत्रध्यापो दूम्यता में डूब-ला रहा है । उसकी कल्पना में मुहर घटीत के एक प्रमात की सप्ति होती है । पर्व-स्नान जमुना का तट । शी सचिपों का प्रेम मिलन । बुद्रलक्षेम धभापण ।

मंदरानी

बहिन तेरे मुसड़े पर यह विपाद की छाया कैसे गहरी हो रही है ?

बैबकी

मेरे विपाद की कथा न पुछने की है न कहने की बहिन ।

मंदरानी

मुझ से तेरा क्या छिनाम है ? कोई दूसरी बात हमारे बीच नहीं हो सकती ।

मं रा १

बेबकी

यह क्या मैं नहीं जानती, परन्तु...

मंवरानी

फिर परन्तु क्या, भोसी । अपने भी की बात मुझे बता तो सही ।

बेबकी

घड़ी सज्जा की बात है । बड़े दुख की बात है । उसे कहने से कोई साम नहीं है बहना ।

मंवरानी

तब तू मेरी सखी नहीं ।

बेबकी

क्यों ?

मंवरानी

तू दुखव रहती है । अपना सपभठी तो अपने दुख-दर्द में अपनी बहिन से छिपावन करती ?

बेबकी

यह बात नहीं है ।

मंवरानी

फिर क्या बात है ?

बेबकी

उस बात को सुनाकर मैं अपनी बहिन के दुख को बढ़ाऊँगी ही

यह जानसे हुए भी मैं उसे कैसे सुनाऊ ? फिर इतने बड़े कसक की बात !

नबरानी

तभी तो मुझे सुना बहिन । दुस्र और कसक का इतना बड़ा बोझ मैं तुम्हें झकसे ढोने नहीं दूंगी । तेरा दुबल शरीर !

देवकी

मैं सुनाऊँ तो तू मुझे पूणा से दुरदुरा देगी । तेरे स्नेह की निधि को खोने का जोखिम कैसे उठाऊँ मला ?

नबरानी

जिसे मैंने जमुना को साझी करके सली माना है सूर्य और चंद्र जिस बहिनाये के मवाह हैं वह क्या यों टूट सकता है भोसी !

देवकी

जसोदा भोबी तेरा हूँ । उसने प्रागे क्या मेरा द्रव ठहर सकता है ? मे सुन । (मुह बोझा धावे करके इस प्रकार कहती है कि जसोदा के सिवा कोई और न सुन पाये ।) मेरा मुँह देखना पाप है नबरानी । मे पुत्रपातिनी हूँ । मैं अपनी संतति को ग्राप हो म्ना जाती हूँ ।

नबरानी

(अचरज में भरकर) यह तू क्या कहती है देवकी ?

देवकी

मैं सत्य कहती हूँ मंदरानी । मैं माँ नहीं राखती हूँ । अपने इन्हीं हाथों से मैंने एक नहीं अपने साथ कुल से बच्चों का बलिदान किया है । उनका यसा घोंटा है । माँ के दूध की एक दूध भी उनके मसै में नहीं उतरने दी है । उनका वह तड़पना उनका बड़ छटपटाना, उनका वह रुदन । धोक । उस महापाप से मेरा सुदुर्लभ रूप कासा पड़ गया है । मेरी भासना सी वेहू कीयला हो गई है । घाब सोना ना, पर्व-स्ताल के वहाने जमुना मैया की गोद में विधाम लेकर इस नगरकी जीवन का भ्रत कर दूमी । पाप के भार को घब घोर घषिक नहीं डारेंगी ।

घञ्जल में पुँह पिया कर तितकती है ।

मंदरानी

(देवकी को अपनी घोर कीच कर दाली से लबा लेती है) बहना मेरी कीयलिया । मैं तेरी घात समझने में घसमर्ध हूँ । मुझे सगता है कि धरती मेरे पाँवों क नीचे स सरक रही है घोर जमुना का प्रवाह बहता का तहाँ जमा ना रहा है ।

देवकी

छोड़ बे, मुझे मत छू मंदरानी । पुष्य सगेवर की राबहुंसिनी मेरो कर्साकिसी छाया से दूर होना ।

उतकी मुजाबों से अपने को मुक्त करने का बल करती है ।

नंदरानी

दुस्वियारी बहिन मुझसे तनिक साफ साफ कह। तो क्या यह सब नहीं है कि भाई कस का क्रोध तेरे संतति-मुख को राहु बनकर प्रस रखा है ? ऐसी ही चर्चा तो रखी है ।

बबकी

यह सब व्यर्थ है । हजार कंस भी क्या मां से उसके बोते जो, उसको संतान को छीन सकते हैं ?

नंदरानी

छीनने की मत बह बहिन । प्रत्याचारी क्या नहीं कर सकता ?

बबकी

यदि मां सबमुख मां हो तो कैसा ही प्रत्याचारी उसके सामने उसकी संतान का स्पर्श नहीं कर सकता । मां का शरीर की बोटी बोटी भक्षण कर देने के बाद ही वह उसे हाथ लगा सकता है । और यहाँ सब मेरी इच्छा से मेरी स्वीकृति से मेरी प्राणों के सामने हुआ । यदि मैं मां होती तो प्राणों का मोह छोड़कर उसका विरोध करती । बिदक का कण बण मां के विरोध का साथ देता । हजारों कंस पूस में मिस बात ...परंतु मैं मां होती तब न ।

मंदरानी

मेरी मैना, मेरी सहैसी । तेरे दुःख को मैं निपूरी ब्या
समझूंगी ।

बेबकी

प्राणों के मोह से मैंने अपने हृदय के टुकड़ों को एक एक करके
दे दिया । मेरे भीतर एक भयातक घाम घसक रही है । प्रतिहिंसा
की भाग नहीं । अपने प्रति यूणा की भाव । मैंने दुनियाँ में माता के
सादरों को नखाया है । मेरा दुःख मैं निपघर बनकर आज मुझे बस
रहा है । जिस जीवन का मैंने मोह किया वह आज पत्थर की शिखा
बनकर मुझे पीस रहा है ।

मंदरानी

(अपने अन्त के बेबकी के प्रांतु पीछती हुई) शांत हो बहिन
शांत हो । तू ने जो कुछ किया है बेबस होकर किया है । तू उसके
लिए बोयी नहीं है ।

बेबकी

मंदरानी, अब इस जीवन में शांति कहाँ बहिन ! मूर्तिमान पाप
मेरी प्राणों के सामने खड़ा है । उसके साँचे के नीचे मेरी गर्दन रखती
है । जमुना मैया ही कारण है तो मैं उसके कोप से बच सकती
हूँ ।

नंबरानी

तेरी कोस से बिम्ब तेब मरक रहा है । प्रत्याचारी के पाप के प्यासे को तेरे द्वारा मरवाकर ईश्वर तुम्हे धमर पक्ष देना चाहता है देवकी ! तू मर नहीं सकती जमुना मैया तुम्हे ग्रहण नहीं कर सकती ।

देवकी

नंबरानी क्या कहती हो । जो महापातक बिम्बू का दण्ड बम मुझे पीड़ित कर रहा है उसी का शक एक बार धीर बसने तू ? नहीं जोशी, मेरी धार्मिक धय वह इत्य नहीं दस सकती मैरा हृदय प्रब उस पापाचार को नहीं सह सकता । उससे पहले मैं मर जाऊँगी ।

नंबरानी

देवकी, बिम्ब नियन्ता की सीसा का आशय किसने समझा है ? इतने दुख में भी तेरे ऊपर बचपाव नहीं करता तो इसमें उसका कोई आशय होगा चाहिए ।

देवकी

चाहे जो हो बहिन, भी महोने मोह ममता को अपने भीतर पोस कर, मैं उसी परिणाम के लिए नहीं रह सकती ।

नंबरानी

तो तू प्राण देगी, बहिन !

देवकी

हो प्राण बेकर ने माता के कलम्य का पालन करूगी,
नंदरानी ! जिससे अय तक बचती रही है वह नर्तक्य भाव पूरा
करूगी ।

नंदरानी

लेकिन देवकी मेरो प्यारी सखी मैं तुम्हे मरने न दूगी । मेरी
कोल देस । विधना ने घायद हमो हेतु इस प्रबन्धा में अपना यह
प्रसाद दिया है मुम्हे ।

देवकी

अरे सच नंदरानी भगवान तुम्हे पुषबती करे बहिन । नंद महार
की बिरदिन की अभिसापाए पूरी हों, पर तू मेरी बिस्ता न कर
बहिन । मुक्त भाग्यहीना के लिए तू अपनी प्राँसों से घाँसू न बास —
जा जा मेरी छाया से हम समय तेरे दूर रहने की प्रीर भी अधिक
भावश्यकता है ।

नंदरानी

देवकी मेरो प्रिय सहबरो जा जा जो बात मैंने कही है उसे
याद रचना । बसुदेव से कह देना बे धाकर उनसे मिल सें । बे दोनों
बालमला घाप हो कोई उगाय कर सगे । भगवान ने पाहा तो तेरा
यह धिनु दुनिया में अजर अमर रहेगा ।

देवकी

ऐसा कहीं हुआ है ? जीवन भर के पुष्प सबय का तेरा फल क्या मे अपने बुर्गम्य के लिए ले सकती हूँ ?

मंदरानी

याद कर एक दिन तूने कहा था, हताश क्यों होती हो मंदरानी ! मेरी एक संतान को तुम पास बना । आ तेरा भावी शिशु प्राण से मेरा हो गया । मेरी बरोहर समय पर मुझे सौंप देनी होगी । इस बात को भूल मत जाना देवकी !

देवकी

यदि तेरी बरोहर की मैं रक्षा कर सकी तो उस पर कभी घपना अधिकार नहीं उठाऊंगी मंदरानी ! यदि वह जिया जागा तो भरे भाग से नहीं तेरे भाग से जियेगा ।

मंदरानी के कानों में यही पिछले रात्र बुझते रह जाते हैं । कल्पना का सूत्र टूट जाता है । वह चौंक कर चारों ओर देखती है । बंध्या की धुसर छाया रात्र की कात्तिमा में बदल गई है । धाकाज तारों से जगजग हो उठा है । पोकुल प्राण में शुष्कता का विस्तार हो जाता है । धनेक नये दृश्य उसकी कल्पना में घाते घोर बिभीन होते रहते हैं । उसका कर्णुया सभी में मुरच्य होता है । हाथ इतनी बन्दी बन्दी बदलते हैं तो जी के सभी उससे परिचित हैं । उनकी

स्मृति अभी तक उसके मन में ताजी है। मंवरानी कभी हँसती कभी दाती कभी धाँसें बिखाली कभी मुस्कराती कभी मौन हो बैठती रहती कभी मंवरान को पुकार माती कभी कोप करती और कभी धाँसु बहाती है। अचानक उसका कम्हैया अचानक लावण्यवती लड़की (राधा) को साथ ले धरती है।

मंवरानी

कम्हैया तरे साथ यह कौन है री ?
कृष्ण

माँ तू नहीं जानती है इसे ?

मंवरानी

मैं कैसे जानूँगी ? मैं तो आज ही देख रही हूँ इसे। भा मेरे पास तो माँ री। देखूँ तू कहाँ की है ?
राधा मंवरानी के पास जाती है। मुकन्दर प्रत्यास करती है।

कृष्ण

यह बरसाने की है।

मंवरानी

(राधा के तिर पर हाथ रखकर) धरे, बड़ी सुसलणी है। त
गाँव की है री ?

राधा

बरसाने की ।

मबरानी

बरसाने की ! है तो बड़ी सुहावनी धनिक मुह ऊपर तो उठा देखू ।

राधा सबा कर मु ह नीचा कर सेती है ।

कृष्ण

मां तू तो सगी उसे बिढ़ाने । ऐसा करने से वह फिर कैसे भायेगी ?

मबरानी

(राधा से) किसकी बेटी है री ?

राधा

वृषभान की ।

मबरानी

वृषभान की, जिसकी घरवासी कीरति कहसाती है ?

स्वीकारात्मक सिर हिमानी है ।

मबरानी

तू तेसी भोसी कैसे है बेटी ! तेरी मया तो बड़ी वैधी है ।

(हँसती है)

राधा

कैसी ?

मंरानी

तेरे से क्या कहूँ बेटी में । और तेरा बाबा भी तो बेसा ही है ।

राधा

(हम्पल से) मैं जा रही हूँ कन्हैया । मैंने भूस की जो तुम्हारे घर धाई ।

कृष्ण

क्यों रुठ गई ? माँ तो हँसी कर रही हैं । (मंरानी से) मेरा से यह जा रही है रुठी । मैंने कहा था न कि उसे बिड़ा मत ।

मंरानी

घरी घी से कीर्तिकुमारी ! (पसका हाव बड़कर) बड़ी मानिनी है । माँ जब मैं कुछ न कहूँगी राजी बेटी । तेरी पम्मा तो मेरी सहेली होती है ।

राधा की मोह में बिछ जाती है । पसकी बोटी भूबती है । पसकी कायी प्रीङ्गी एक सिटी है । पसकी बोङ्गी प्रीङ्गी को बेनी है । नई पपरिया बहनाती है ।

कृष्ण

बस बहुत होगया । अब बस प्रांसमिचीनी खेसंगे ।

दोनों प्रांगन के दूसरे कोने में बाकर देखते हैं । प्रांगन के घोर लड़के लड़कियाँ भी आजाते हैं ।

नबरानी

इस राधाकृष्ण की जोड़ी को भगवान ने मानों अपने हाथों से रचा है । (बाकर बाहर से नंद नहर को बुला लाती है । प्रांगन के दूसरे से उन्हें दिखाती है ।) देखो ।

नंद

सचमुच नंदयानो । जोड़ी तो बड़ी मृषर है । कन्हैया के पास राधा कसौटी पर सोने की रेखा ही लगती है ।

नबरानी

यस पसो । नजर म मारो । विभना को धर्यवार दो जिसने कन्हैया के लिए राधा को गढ़कर भेजा है

नंद

कस ही किसी को बरसाने भेजना पड़ेगा ।

नंदरानी

इसमें सोच विचार क्या ? प्राब ही भेज दो न ।

नंद

प्राण ही । अच्छी बात है प्राण ही मेज दू पा ।

नंद का प्रस्थान । कृप्य हुबेली से राधा की प्राँचों
मीचते हैं । प्राँचों के कोनों से वह छिद भी बैठती
रहती है ।

एक सखा

कन्हैया, वह देख रही है ।

दूसरा सखा

प्राँचें ठीक से मीच कान्हा ।

कृप्य

इसकी प्राँचें हैं कि प्राण की फाँकें ? मेरे हाथों में तो प्राँची ही
महीं ।

इस बात से नंवरानी चौंक बढ़ती है । ध्यान दूर
जाता है । छिद बही अंधेरी रात । सुनसान भीकुल
प्राण के अपने कम में प्राकाश की घोर निहारती वह
अकेली बँठी है । बाहर हवा बेप से सनसना रही है ।
वह एक पहरी निरबाध बैठी है । प्राँचों के सामने
नये इश्य आते हैं । " राधा अब सपानी हो गई
है । कन्हैया भी बड़ा हो गया है । दोनों का प्रेम
दिन दिन बढ़ा होता जाता है । प्राण के पुत्रक घोर

मुश्किलों का दृष्टि पर प्राण बेटे हैं । सभी एक दिन रथ
 लेकर प्रकूर या बसकते हैं । दृष्टि उनके साथ मधुरा
 क तिए बल पड़ते हैं । योशुल में घबेरा सा जाता
 है । राधा दून में लोटती है । योपिया और ग्याल-बाल
 दृष्टि दृष्टि की रथ लगाते घूमते हैं । पार्थ पास
 नहीं बरतीं बढ़ते बल नहीं पकड़ते । तमास और
 कर्ब की ज्ञाया के नीचे होमेबाला रास रथ सहसा
 बंद ही जाता है । करील के कुन्नों में से समय असमय
 बांधुरी का स्वर नहीं सुनाई पड़ता । बमुता के किनारे
 गुम्ब उबासी द्य गई है । बबमुमि की सारी घोमा
 समस्त भी ब से जो गई हो । प्रातकाल उठ कर कोई
 घ्रास नहीं बिलोता । निकाला हुआ मादन जहाँ का
 तहाँ पड़ा है । जब माजनबीर ही नहीं है तो उसकी
 तमास कोई क्यों करे ? नदरली घास योपियों के
 बलाहने को सरसती है । जहाँ तहाँ जम्होने कहना मेमा
 कि तुम सब की हो क्या गया है ? कन्हैया की धरापत
 को दरगुजर क्यों करती हो ? मेरे पास उसकी हिमायत
 क्यों नहीं लाती ? अब मैं उसकी हिमायत नहीं करूँगी ।
 घ्रास के मडि को फोड़कर बबिकारो करेगा तो मैं
 उसे सबा डूँगी । किसी का पड़ा फोड़ या तो उसके
 कान मरोड़ूँगी । माजन की बोरी करेगा तो उसके
 बेंत लपकूँगी । फिर भी कोई घाला नहीं । साक को

छियार बीसते घोर रात को कुत्ते भूंकते हैं। इनके
झिंझा और कुछ मुन बढ़ता है तो केवल कब्रन घोर
लित्तकियां। राह चलता एक घाबरी नव मधुर के
द्वार के पास से निकलता है। मंदरानी बौड़ कर द्वार
पर आ जाती है।

मंदरानी

कहाँ से आ रहे हो भाई ?

पबिक

राजधानी से आ रहा हूँ।

मंदरानी

कौम सी राजधानी ?

पबिक

राजधानी आप नहीं जानती ? घरे मधुरा नगरी नहीं जानती ?

मंदरानी

मधुरा क्यों नहीं जानूँगी ? वहीं तो मेरा कन्हैया गया है।—

पबिक, तुमने वहाँ मेरे कन्हैया को देखा है ? खिर पर मोरमुकुट
कमर में पीठाम्बर घघरों पर घुरसिया।

पबिक

कितने ही कन्हैया वसते हैं वहाँ। वह कोई छोटी नगरी थोड़े ही

है। वस्र योजन तक फैली है मथुरा। जहाँ तक नजर जाती है वहाँ तक भट्टासिकाएँ ही भट्टासिकाएँ।

नबरानी

कन्हैया तो मेरा एक ही है पणिक। कितने ही कन्हैया न मथुरा में हो सकते हैं न सारी धरती पर। तुमने भगर एक बार उसे देखा होता।

पणिक

मैंने मथुरा का बहुत कुछ देखा है। कंस की मथुरा में गया था और कृष्ण की मथुरा छोड़ कर आया हूँ।

नबरानी

धरे बही कृष्ण ! पणिक, बही तो हमारा कन्हैया है ! तुम नहीं आमतो बही तो हमारा साइना है।

पणिक

(स्तम्भित होकर) राजराजेश्वर कृष्ण आपके कन्हैया हैं।

नबरानी

धरे हाँ बटोही ! क्या तुमने उसे देखा है ?

पणिक

हाँ मैंने देवकीनंदन राजराजेश्वर कृष्ण के दर्शन किये हैं।

धर्म का नाथ

मबरानी

(बंसे तिसी ने बरबर बै मारा हो इत तरह पीछे हट कर) क्या कहा पबिक देवकीर्नदन राजराजेश्वर कृष्ण अर्थात् कण्ठ देवकी का बेटा ?

पबिक

हाँ मया देवकीर्नदन भगवान् वामुदेव ।

मबरानी

धीर नदनदन नहीं अमुशानंदन नहीं । हाय यह मैं क्या सुन रही हूँ ? हाय हाम मेरा कन्हैया । मेरी भाँसों का तारा । मेरा जाइला अजेश्वर मेरा राधारजन । तू देवकीर्नदन कैसे बन गया ? वामुदेव कैसे हो गया ? अमी को बिन भी तो नहीं बीते हैं । मसुरा में पर बरते हो इनना बदल गया । हाय, क्या इसीलिए मेने राठ को राठ नहीं माना बिन को बिन नहीं समझ । आठों पहुर तैरे कुछ स्वास्थ्य के लिए मनीतियाँ मानीं । देवताओं को पूजा । देवी को धाराया । फूल की छड़ी से कमो छुपा नहीं । मासनमिथी के सिवा कुछ पाने को दिया नहीं । पबिक, कुछ बोसो ठो सही, तुमने अमी क्या कहा था ?

पबिक

कुछ अचित्त सा रिपारि मरता है । आँसों में आंगु था बरते हैं ।

मंदरानी

तुमसे भूल हो गई थी पयिक यह कहो न। घरे तुम सो रोने सगे !—तुम्हारे, मूल बोर्ड वही मूल नहीं थी। मैं कब उसे भारती हूँ। मैं नंदनंदन की माँ तुम्हें समझा करती हूँ। उठो जाओ अपना रास्ता सो भया।

पयिक बिना कुछ कहे उठकर पस देता है। एक रूप घाता हुआ बिजारी पड़ता है। पोंडों की बापों से पड़ी हुई मूल घाली है। गोदुल में हसबस मध जाती है, 'घा रहे हैं, नरनदन घा रहे हैं' बनुरानदन घा रहे हैं रापारजन घा रहे हैं।

मंदरानी

(घर से बाहर आकर) कहीं मेरा कन्हैया ?

राधा

माँ यह मूल उनसे पहले ही उनका संदेशा स भा रही है।

बढ़ती हुई मूल का घासिक्रम करती है।

मंदरानी

घा, कन्हैया को छुड़कर घानेवासी मूल मेरी इस पपरार्थि भांगों से समकर दग्धे शीतल करदे।

रूप पात घाता है। कीलाएत कम हो जाता है।

सो पुरप्य थी। बापक निरात होकर कन्हैया है।

तो कोई और है। कृष्ण का मेरा हुषा रब घाकर
 बड़ा ही जाता है। ऊँची रब में से उतर पड़ते हैं
 और कृष्ण-सखा के रूप में अपना परिचय देते हैं।
 कृष्ण के दूत को सब लोग घेर बैठते हैं। नंदरानी
 का हृदय बैठ जाता है। वह मुँह को घण्टन में
 धिना लेती और रोती है।

ऊँचो

(भीड़ को हटा कर) नंदरानी मैं कृष्णसखा ऊँचो घापको
 प्रणाम करता हूँ ।

नंदरानी

(घरे हुए घने से) सी वप जियो पुत्र पर यह घताघो तुम किस
 कृष्ण के सखा हो ?

ऊँचो

मेरी परीक्षा से रही हो मेवा ? मैं उस कृष्ण का सखा हूँ जो
 नित्य घांमुरी में यही गाय करता है—

ऊँचो मोहि ब्रज विघरत नाही ।
 हं बनुता की तुम्बर कपरी घर कुजल की छाँही ।
 मे मुरबी के बच्छ बोहनी परिक दुहावन बाही ।
 म्बाम बास सब करत कोलाहल नाचत बहि पहि बाही ।
 यह बनुरा कंबल की नबरी मनि मुक्तादल बाही ।
 बबहि नुरति घावत बा मुय की बिन उमवत तनु नाही ।
 घवनिव जाति करी बहु सीला बनुरानंद विबाही ।
 ऊँचो, मोहि ब्रज विघरत नाही ।

मंजरानी

(बराम्द होकर धम्पनात करती हुई) ऊधो तुम मेरे कम्हैया के सञ्जे सखा हो । तुम्हारे सामने ही उसने अपना हृदय खोसा है मैया । यही मेरे सात की बानी है । एक बार फिर सुनाओ तो सही ।

ऊधो

मां अब आपकी मेरा विश्वास तो हुआ ?

मंजरानी

अविश्वास नहीं था पुत्र । एक पक्षिक स मैंने एक दूसरे ही कृष्ण की बात सुनी थी ।

ऊधो

दूसरे कृष्ण ।

मंजरानी

हां मैया—देवकीन्दन भगवान् वामुदेव ।

ऊधो

मैं समझ गया मां । पक्षिक बेचारा क्या जाने कि देवकीन्दन से पहले वे जमुवानन्दन हैं वामुदेव से पूर्व मदनवन हैं । आप सब से जो कुछ उन्होंने पाया है वह सी वामुदेव और दबकी दे सकते हैं ? आप मेरी बात पर विश्वास करें उनका मन यहाँ भीर गरीर यहाँ

२४]

है। कस के अपमानक पतन से कर्तव्य का इतना बड़ा भार उनके ऊपर था पड़ा है कि व यहाँ माने में बिबध है नहीं तो

संवराणी

नहीं तो दीड़ा माता। मे जानती हूँ मेरा मास मेया के बिना नहीं रह सकता है। मेया के बिना कौन उसके मन की बात जानने की चेष्टा करेगा ? सहज संकोच किसके सामने उसे मुह खोलने देगा ?

ऊमो

यही बात है माँ। ऐसा कोई दिन नहीं आता जब वे प्रज की पाद करके रोठ न हों।

संवराणी

(पात बड़ी हुई राधा की घोर लंकेत करके) देखो ऊमो कन्हैया की माससहचरी वृषमान ससी को। अपने कृष्ण के लिए कसपते कसपते इसकी सोने सी देह कोपसा हो गई है।

ऊमो

मे देव रक्षा हूँ माँ। (राधा से) कीरतिकुमारी धन्य हो तुम। तुमने दुनियाँ में प्रेम का मादर्श स्थापित किया है। कृष्ण को तुम्हारे प्रेम का जितना बल है उतना भीर किसी का नहीं। इसी तुम्हारे प्रेम के बल पर उन्हीं कर्तव्य का इतना बड़ा पहाड़ उठामा हुआ है।

राधा

कुछ बोलती नहीं है। उसको भाँखों से निरन्तर धनु प्रवाह उधरता रहता है।

ऊयो

तुम्हारा धीर माता यद्योदा के लिए उन्होंने विशेष सदशा दिया है। उन्हीं के धर्म में कहता हूँ सुनो—प्रम महान है परन्तु कृतव्य उससे भी महान है। कर्त्तव्य पर निष्ठावर होने की शिक्षा मैंने तुम दोनों से ही पाई है। मैं तुम्हारा निरञ्जली हूँ। अम्ब-मास्तर में भी मैं इस ऋण से मुक्त होने की शक्ति नहीं रखता।

राधा

लेकिन ऊयो, वे यहाँ आयेंगे कब यह भी कुछ कहा है ? दर्शन की प्यासी इन भाँखों की कब तृप्ति मिलगी ?

ऊयो

राधे, उन्होंने कहा है मैं तुम्हारा ही हूँ। तुमसे दूर कभी नहीं हूँ। मैं कृतव्य करता हूँ उसमें सदा तुम मेरे साथ रहती हो। तुम भी कर्त्तव्य की धोर ध्यान लगाओ। तुम देखोगी मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ।—धीर यह मत समझा मैं पाऊँगा नहीं। अकृत्य भाऊँगा। तुमसे मिले बिना मुझे धन नहीं है।

राधा

अच्छा बात है। प्रयत्न करूँगा ऊयो, पर इतनी राधना धीर

इसने ज्ञान की पूंजी कहां से पाईगी यही एक सीब है।

बीरे बीरे जाती है।

ऊधो

कृष्ण-सखी तुम सर्व समर्थ हो।

नंदराजी

ऊधो, मेरे बेटा ने मुझे बसन्ध करने की सलाह दी है। मेरी मोह से दूधो घाबों में उसने ज्ञान की ज्योति जगाई है। जिसके ऊपर दुनिया के सुख दुख का मार है उसे मैं अपनी ही गोद में छिपा रखना चाहती थी। यह मेरा धर्म्य भा बरस। मेरे कन्हैया के दोनों ही रूप सत्य हैं। प्रेम के क्षेत्र में वह नदनदन है बसुदातदन है राधिकारमण है, बसन्ध के क्षेत्र में भगवान् वासुदेव। मेरी घोर से देवकी से कहना कि वह अपने वचन का पालन करे प्रेम का प्रतीक मेरा जो कन्हैया है उस पर अपना अधिकार न अताये। राजराजेश्वर कृष्ण को मैंने उसके सिये छोड़ दिया है।

ऊधो

धर्म्य हो माता।

ऊधो नंदराजी के चरणों पर बिरते हैं। समस्त ध्यात बाल घोर ब्रह्मपतार्थ एक स्वर से नंदराजी का अपययकार करते हैं।

नबरानी का ध्यान भंग हो जाता है। नमीर रात्रि की सुगंधता जैसे चारों ओर से घेरे है। केवल घ्राकारा के तारे उसकी ओर सब भी दृष्टको लयाये हैं। सारा जीवन ही उसे स्वप्न की द्वाया सा लयता है। वेग से चलने वाला हवा का झोंका ही केवल सत्य प्रतीत होता है।

पदा

चंद्रग्रहण

पात्र

योवा	गोतम बुद्ध की पत्नी
राहुल	बुद्धदेव का पुत्र
गोतमी	बुद्धदेव की विमाता
शुद्धोदन	बुद्धदेव के पिता
सुभद्रा	गोपा की दासी

बोनों बाहें खंसाकर राहुल को वोर में भरमा
जाहती है ।

राहुल

(गोपा की मुखापों से घपने को मुक्त करके) माँ तुम तो सदा
ज्वाण में हूयी रहती हो । मैंने सवेरे बहा या न कि हम खंभप्रहण
महाने रोहिणी तट पर बसेंगे ।

गोपा

(जोई हुई सी) खंभप्रहण महाने ?

राहुल

हाँ भीर में देसता हूँ तुमने अभी तक वख नहीं बदसे हूँ ।

गोपा

मेरा खंभप्रहण कहाँ छूटा है बेटा ! हाय क्या बह कमी इस
बीबन में छूटेगा ? अगर कमी बह समय प्राया तो मैं बज भी
बदलूमी शृंगार भी करूंगी बेणी में मोती भी पूर्युंगी, प्राह !
रोने लगती हूँ ।

राहुल

माँ तुम तो रोने समी । सो मैं भी न जाऊँया ।
ठिठकी का बाब

गोपा

नहीं बेटा ! तुम जाओ । देयी गौतमी के साथ तुम जाओ ।

राहुस

घोष तुम न बसोगी ?

घोषा

(फिर बिभारों में जो बसती है । पत्ती बसा में पुष्पती है) कहीं ?

राहुस

फिर बताओ ? घगष बताओगा तो तुम रोने लगोगी ।

घोषा

(पाद करके) बान्द्रप्रहस्य-स्नान को ?

राहुस

हाँ, आज बान्द्रप्रहस्य-स्नान के लिए रोहिणी के छट पर घारी बुनिया उमड़ पड़ेगी । देवी गौतमी ने कहा है कि मह पर्व कई दिनों बाद पड़ा है ।

घोषा

बेटा, मेरे भाग्य में पर्व-स्नान लिखा नहीं है । यों तो घर में ही मेरे लिए नित्य पर्व-स्नान है ।

राहुस

माँ दू तो हरएक बात को अपनी वशा से मिताने लगती है ।

घोषा

बेटा, तो किससे मिताने ?

फिर रोने लगती है ।

राहुल

(बाती से) मुमद्रा देवी गोतमी से जाकर कह मां नहीं बस रही हैं धीरे मेरा भी विचार पसट गया है ।

बाती

ओ धाशा कुमार ।

बाना बघती है ।

गोपा

ठहरो मुमद्रा ! देवी गोतमी के लिए धासन बिछाओ । वे देखो धारही हैं ।

बाती धासन बिछाती है गोतमी का प्रवेश, गोपा प्रणाम करती है । गोतमी धातीबाब देती हैं ।

राहुल

(गोतमी से) मां तो नहीं बस रही हैं ।

गोतमी

मैंने समझ लिया था । इली से रव लीटा से जाने को कह धार है ।

गोपा

मां मेरे कारण धाप पर्व-म्नाह के फल से संबंधित रहेंगी । कुमार को साथ लेकर धाप नसी जायें न ।

राहुल

दादीजी देखो मां क्या कहती है ? हम लोगों को प्रबेला ही भेजना चाहती हैं ।

गोतमी

पर प्रकसे कौन जायगा ?

मोपा

प्रकसे क्यों मां ? कुमार को भे जाइये ।

गोतमी

मोपा मेरा तो तीर्थ तू ही है । तुम्हें घर छोड़ कर नहीं जाऊँ सोचा था, इसी बहाने भुसा कर लेगा जो कुछ बर्तना सकूँगी ।

मोपा

सबभुज मां ऐसा होगा क्या ? जी बहस जायगा मेरा ?

सितकंठी है ।

गोतमी

रहने के बेटी । हम में से कोई नहीं जा रहा है ।

राहुल

दादीजी !

गोतमी

परस, बोसो ।

राहुस

क्या संन्यासी भी इस अन्नग्रहण के पर्व पर रोहिणी स्नान को धार्येंगे ?

गोतमी

भवश्य । ब्रह्मस्य धीर संन्यासी समी धार्येंगे वेटा ।

बोना राहुस के मुह से धार्ये की वस्तु हुनने के लिए
उतकी धीर देखने लवती है ।

राहुस

तब तो बड़ा अश्वा भवसर है ।

गोतमी

हां बड़े बड़े ष्टपि-मुनिमों का दर्शन लाभ प्रकृति का सामीप्य
अश्वा भवसर ही है वस्त ।

राहुस

बादीजी, सुभद्रा कहती है कि पिताजी संन्यासी होगये हैं ।

ईसी गोतमी इत बर्षा से कुप्य व्यस्त ली रिचार्ड
रेती हैं ।

गोतमी

तो ?

राहुस

पिताजी भी कहीं घायें वहाँ तो हम उन्हें सहज ही पा लेंगे । मां से कहो न दादीजी कि वे जिनके लिए राठ दिन रोती रहती हैं उन्हें पाने के लिए हम सोच लें ।

गोतमी

नहीं भूस है बेटा तुम्हारी । तुम्हारे पिता कभी किसी पर्व-तीर्थ में नहीं जाते ।

राहुस

(आश्चर्य व्यक्त) किसलिए ?

गोतमी

वे एकान्तवासी तपस्वी हैं वत्स ।

राहुस

कैसे जाना आपने ?

गोतमी

उनके लिए कौन कौन सा तीर्थ नहीं छान ढाला मैंने । यदि धर्म सं-वासियों की तरह वे पर्वों और तीर्थों में जाते जाते तो कभी मैंने उन्हें पा लिया होता ।

राहुस

दादीजी, मेरा मन कहता है कि वे राहिली किनारे हमें मिलेंगे ।

गोतमी

बेटा, यह बात अपनी मां से कह ।

गोपा

बेटा तू मे तो पिताजी को देखा नहीं है तू उनके लिए इतना
घबोर क्यों है ?

राहुल

मैं उन्हें ठेरे लिए खोज भागा जा रहा हूँ ।

गोपा

क्यों बेटा ?

राहुल

तू उनके लिए रोती जो रहती है ।

गोपा

पर तू उन्हें कैसे पहचानेगा ? तू तो खो गया नहीं है उन्हें ।

राहुल

मे खो गया हूँ । तू मे सम्झाती का चित्र सीखा है वह मेने देखा
है । (गोतमी से) दापीजी ठीक उस संख्याती जैसे ही तो हैं
पिताजी ?

गोतमी

हाँ बन्ग ।

राहुस

तब क्यों न मैं उन्हें पहचान सूँगा ।

गोतमी

हाँ, यही तो ।

राहुस

(घोषा से) मातेस्वरो धब तो तुम्हें बलना चाहिए पिताजी मेरी बात न मानें न धार्यें ता सुभ मना लागे ।

घोषा

(सम्भुक्ति भाषों को बरती की ओर यथाये रखकर) देना, मैं मही जाळेंगी । तू हठ न कर ।

गोतमी

राहुस बरन, धब जोर मय दे । तरो माँ का इच्छा मही है ।

राहुस

ऐसी बात नहीं है दादीजी ।

गोतमी

तो क्या बात है ?

राहुस

माँ पिताजी से कट गई हैं ।

गोतमी

कठ गई है ?

राहुल

हां, मैं बताऊँ क्यों ?

पञ्चोपराय मीमी प्राणों को ऊपर उठाकर किशोर
हस्म के साथ राहुल के मुँह की ओर देखती है ।

गोतमी

राहुल बरस तू बड़ा बहुत है । तेरी बातों ने तेरी माँ को रु
कर सिया है ।

राहुल

पिताजी पुपचाप पसे गये । माँ को यह बात बहुत सटकती है ।
यस बात से माँ इतनी रुठ रही है कि वे भा जायें तो वे मुँह से भी
बोसे ।

गोपा

राहुल तुम्हें बातें बहुत माने लगी है ।

राहुल

मैंने अपनी ओर से क्या बोका है इसमें माँ ? क्या मुमद्रा से
तुम्हीं ऐसा नहीं बोस रही थीं ।

गोपा

क्या मैं इसलिये मुमद्रा से कोई बात करती हूँ कि तू
मेरे से कह दे ?

राहुल

(गीतमी से) देख लिया बाबीजी । मैंने ठीक कहा था न कि मां पिताजी से बूट रही हैं ।

गीतमी

तू ठीक कहता है बस ।

राहुल

परन्तु क्या इतने साल तक इन्हें बूटी रहना चाहिए ?

गीतमी

नहीं रहना चाहिए ।

राहुल

वांछा इन्हें समझाइये । ये हम लोगों के साथ बसें । उन्हें तलाश कर घर से भावें ।

गीतमी

यह सब तो बस तू ही अच्छी तरह कर सकता है । तू ही मां को समझ । मां बेटे के झगड़े में बूढ़ों बाबी का पकना ठीक नहीं ।

गीतमी का प्रस्ताव

राहुल

(गोपा से) मातेरवरी देखो मैं भीर बाबीजी दोनों ही चाहते हैं कि तू उस बात को भूल जा । प्रसन्न होकर हमारे साथ बस ।

गोपा

हमें बसने की जरूरत नहीं है ।

४]

राहुस

हां, मैं बताऊँ क्यों ?

पद्मिनीजी नीली घाँवों को
हास्य के साथ राहुस के मुँह

गोतमी

राहुस बरस पूँ बड़ा चतुर है। तेरी वा
(सिमा है।

राहुस

पिताजी चुपचाप बसे गये। माँ को
इस बात से माँ इतनी रुठ रही है कि ब
न बोसे।

गोपा

राहुस तुम्हें बार्ते बहुत घाने सग
राहुमैंने अपनी धोर से क्या बोटा
तुम्हीं ऐसा नहीं बोस रही थीं।

गो

क्या मैं इसलिये सुमदा से
पद्मिनीजी से कहूँ ?

गोपा

इतने से ही क्या धारा जाता है ? जैसे तुम्हें विश्वास है कि पब-स्नान के मेले में वे प्रबलप्य मिसंगे बसे ही में भादनस्त हूँ कि वे धायंगे ।

राहुस

महां तेरे पास ही धायंगे ?

गोपा

हां ।

राहुस

पर ऐसी कौन सी वस्तु है तेरे पास मां जिसके मिये उन्हें धाना हागा ? दादीजी कहती हैं कि उन्हें बर-बार राजपाट किसी का मोह नहीं है । वे सतार त्वांगी गुय बुय होकर बिचरत हैं ।

गोपा

ब ऐसे ही है बटा ! ब धाने रवाग की महिमा से धय्य है ।

राहुस

तब मां क्या उन्हें माना होगा तेरे पास ?

गोपा

मैं ऐसा ही मानती हूँ ।

राहुस

क्या पिठाची को हम नहीं जाना है ?

गोपा

बे स्वयं आयेंगे ।

राहुस

कब ?

गोपा

बाग़प्रहरण हटने पर ।

राहुस

तुम्हें निश्चय है ?

गोपा

निश्चय है ।

राहुस

और न आयें ता ?

गोपा

कैसे नहीं आयें । उन्हें जाना पड़ेगा बे आयेंगे ।

राहुस

बे किससे डरत हैं जो आयेंगे ?

गोपा

डरने से ही क्या घाया जाता है ? जैसे तुम्हें विश्वास है कि
 पर्व-स्नान के भेजे में वे भवस्य भित्तों वैसे ही मैं प्राणवस्तु हूँ कि वे
 प्रायेंगे ।

राहुम

महां तेरे पास ही प्रायेंगे ?

गोपा

हां ।

राहुम

पर ऐसी कौन सी वस्तु है तेरे पास मां, जिसके सिधे उन्हें
 घाना होगा ? बाबोनी कहती हैं कि उन्हें पर-बार राजपाट किसी
 का मोह नहीं है । वे सतार त्वावी घुड़ घुड़ होकर बिचरते हैं ।

गोपा

वे ऐसे ही हैं बेटा ! वे भगने त्वाग का महिमा से बन्ध हैं ।

राहुम

तब भी क्या उन्हें घाना होगा तेरे पास ?

गोपा

मैं ऐसा ही मानती हूँ ।

राहुल
सब तो मां तेरी महिमा पिताजी के त्याग की महिमा से भी
बढ़कर है ?

गोपा
नहीं बेटा, मैं ऐसा नहीं कह सकती ।

राहुल
बाबाजी तो कई बार ऐसा कहते हैं मां ।

गोपा
क्या कहते हैं बाबाजी ?

राहुल
वे कहते हैं तूने सन्तम्पुर में रहकर तपोवन से कठिन तपस्या
की है । तेरी तपस्या और त्याग ने पिताजी के तप और त्याग को
छीका कर दिया है ।

गोपा
नहीं बेटा ।

राहुल
तो क्या बाबाजी असत्य कहते हैं ?

गोपा
असत्य नहीं । क्या बाबाजी कभी असत्य बोल सकते हैं ?

राहुस

(लहास्य) मां तू बड़ी मोली है । दादाजी कभी असत्य नहीं बोल सकते और जो वे कहते हैं वह ठीक नहीं है । यह दोनों बात एक साथ कैसे हो सकती हैं ?

गोपा

हो सकती है बेग । तेरे दादाजी मुझे उसी तरह प्यार करते हैं जैसे मैं तुम्हें करती हूँ । इसी से वे मेरे छोटे से काम को भी बड़ा मान बैठे हैं ।

राहुस

पर तू ने इतने सानों से कैयों में कधी नहीं ली है । इस मैसी पुरानी साड़ी को बरसों से नहीं बदला है । अपने महस में कुम्पासन और बंदन के पाटे के सिवा कुछ रखने नहीं दिया है । यह सब क्या स्वाम नहीं है, तेरा ?

गोपा

जो मुझे नहीं सुझाता है उसे हटा देना त्याग नहीं होता । तपोवन के असह्य कष्टों से इसका कोई भेस नहीं है बेटा ।

राहुस

मेरी समझ में नहीं आता कि फिर क्यों पिताजी तेरे पास दौड़े आयेंगे ? दीन-हीन गोपा को क्यों नहीं कुछ कुछ महिमाभय मगवान् की खोज में चलना चाहिए ?

धीरे धीरे राहुल को जकड़नेवाली उसकी बाँहें
 झिझिल होती हैं और उसे सूर्य में घासती हैं। गुजरा
 मुलाबजल लाने बौझती हैं। पीतमी बंधा पर मोला
 का सिर रख लेती हैं। सुडोरन बरब से उसके मुख
 पर हवा करते हैं।

राहुल

माँ माँ, धरे माँ को क्या होगया ?

बंध पर उसकी घावाब घूंझती हैं पर कोई उत्तर
 नहीं देता। सबका ध्यान मुनिप्यत मोला की ओर है।

पर्दा

एवमाकाश
मई १९४२

चीवरधारिणी

नट

बुद्धदेव	बौद्ध धर्म के संस्थापक
मानन्द	बुद्धदेव का शिष्य
शुचिता	पुत्र शोक से बुरी एक गारी
पटाचारा	एक भिक्षुणी
सौम्य	बुद्धदेव का एक शिष्य
हस्ता गीतमी	मृत बालक की माता

शुद्ध सन्तान

भयमान् बुद्ध प्रातन पर विराजमान । ध्यानम्य प्रादि कई धमल दिव्य
उनके सम्मुख बैठे भगवान की बाली का प्रभुन पी रहे हैं । भयमान का नरप
बुध शोक व्यथिता एक नारी जिसके प्राये पीछे लोई नहीं । अपनी एकलौती
संतान के प्रसन्नान पर जो नार्म में विताप कर रही थी और जिसे संन की
एक निजुली नमवान के बरलों में ले आई ।

बुद्धदेव

धुधिता के दुख की ओर देखो धानद ! इसे सभी सभी पुत्र
शोक सहना पड़ा है ।

धानद

पटाचार्य से बड़ कर तो उसका दुख नहीं हो सकता । वह तो
सर्वस्व गंवाकर आई थी ।

बुद्धदेव

इसकी प्रकैसी संतान भी इसका सर्वस्व ही थी धानद ।

धानद

आ धुधिता' कह कर जिस क्षण भयमान ने इसे बुसाया उसी
क्षण इसके नाम नाम के दुख निवृत्त हो गये ।

बुद्धबोध

अपनी सहज साधना से सत्य का परिबोध करनेवासी भगवती पटाभारा ने पर प्रकाशन करते करते ज्ञान प्राप्त किया । एक बार दो बार तीन बार पैरों का भोजन पहले यहाँ फिर यहाँ और फिर सबसे धागे जाकर सूख गया । उसी घटना का अनुशीलन करने से उन्हें प्रकाश मिला । उन्होंने सोचा— इसी तरह प्राणी पक्षी भवस्या में मरते हैं, दूसरी भवस्या में मरते हैं तीसरी भवस्या में भी मरते हैं । सभी मरणाधीन हैं सभी अनित्य हैं । मोह और ममता के प्रति वैराग्य का उदय हुआ । आसक्ति की भावना का नाश हो गया । बुद्धमता जाती रही । वे विजयिनी हुईं ।

शुचिता

महात्मन् आप लोग जिन्होंने ससार का त्याग कर दिया है गृहस्व के दुःख-सुख से बहुत ऊँचे सठ गये हैं । आप धन्य हैं !

बुद्धबोध

देवी जाओ बुद्ध-शासन में हड़, विमुक्त चित्त भयवती पटाभारा की अनुभववाणी का पान करो । तुम्हारा क्रम्याण होगा । तुम्हारा चित्त शांत होगा । उद्वेग, शोक और शोक का नाश होगा । लो, वे यही सा रही हैं ।

पटाचारा

पति-पुत्र, माँ-बाप सबसे बिमुक्त निराधार हतमाय्य भारी को
 खाति के घनंत साम्राज्य में प्रतिच्छिन्न करमेबासे कल्याणनिधान
 विश्व पाठा भयवाम् बुद्धदेव की जय हो !

बुद्धदेव

(हाथ ऊंचा करके प्राचीर्बचन करते हैं) कल्याण हो देवी अपने
 समुत्थोपम उपदेश से दुस्वियारी शुचिता को कल्याण-मार्ग में प्रवृत्त
 कराओ । (शुचिता की ओर इंगित करते हैं ।)

पटाचारा

भगवाम् के संमुख में उपदेश करू ? अच्छी बात है प्राप्ति ।
 (शुचिता की एक ओर लेजाकर) बहिन प्र-दांतों का दमन करमेबासे
 पूण निर्मय पुश्य इन्हीं मध्यक संबुद्ध की कल्याण मे मुक्त खेती
 समागिनी के संताप का एक क्षण में नाश कर दिया । पुत्रशोक
 रूपी घल्य सब मेरे बिस को दुखी नहीं करता ।

शुचिता

(धातों के घातु बोझी तथा पटाचारा को प्रतिपात करती
 हुई) मेरा साज मेरा साहजा, मेरा सुहाग ! हाय ! मैं कैसे धीरज
 परू ? देवी ! इतनी खाति इतनी सदबुद्धि कहाँ से लाऊँ ?

पटाचारा

यही दया मेरी थी बहिन । इससे भी बुरी इससे भी गई-बीती ।

शुचिता

मेरा मन तो घाँव नहीं हो रहा, देवी ! हृदय भीतर से विसाप कर रहा है । मैं बड़ी अभागी हूँ । मगबान् के आश्रय में भी शान्ति नहीं पा रही !

पठाचारा

अपना अपना कह कर तुम जिसके सिये रो रही हो उसके आँसु में तुम यह भी तो नहीं जानती कि वह किस पथ से आया या घोर किस पथ से चला गया ? फिर विसाप क्यों कर रही हो ? और यदि यह मामूली भी हो तो भी तुम क्यों रोओ ? क्योंकि यह तो प्राणियों का भ्रम ही है । जो बिना पूछे आया या घोर बिना पूछे चला गया उसके सिये रोना क्या ? सोचो तो बरा जो कुछ दिन के सिये कहीं से आया या तो क्या सोच कर नहीं आया ? जो एक मार्ग से आता है उसे दूसरे मार्ग से जाना ही होता है । ऐसे प्राणी के लिए रोने बोलने घोर विसाप करने से कोई क्या पायेगा ? जिस रूप में जाना उसी रूप में चला जाता फिर सोच किसके लिए ? बोलो, बताओ । सुप क्यों हो ? शुचिता बहिम !

शुचिता

(पठाचारा को बड़ा ललित स्वर में बुलाकर) भगवती की निमस आँखों का प्रसाद पाकर मैं कृतार्थ हुई । मरी आँखें खुल रही हैं

मैं देख पा रही हूँ कि मेरा शोक कितना निराधार था ! जो मेरा था ही नहीं उसे अपना मान कर मैं दुखी हो रही थी । मोह का वह परदा आपने उठा दिया । धर्ममार्ग का अनुसरण करनेवासी बेबी, मुझे अपनी छाया में स्थान दो । इस जीवन और इस काम को पवित्र करने के हेतु सुगठ भगवान् ने निम्न विचारों की जो मन्दाकिनी बहाई है उसमें स्नान करने की मुझे आज्ञा दो, साध्वी !

पटाचारा

तो बोसो आज मैं भगवान् बुद्ध, उनके धर्म तथा संघ की शरण लेती हूँ ।

शुचिता

आज मैं भगवान् बुद्ध, उनके धर्म तथा संघ की शरण लेती हूँ ।

आधम के बाहर कोसाहस बुनाई बढ़ता है । सब लोग उत्सुक होकर देखते हैं । पटाचारा और शुचिता भी देखने की जाती हैं ।

आनन्द

(बम्बलर से) कसा कोसाहस है सीमर ?

सीमर

एक स्त्री मृत बासक को निपकाये आधम में चुमी था रही है । अमण लोग प्रशुचिता के विचार से उसे रोक रहे हैं, बम्बु

वह मानती कब है ? पता नहीं भवनाम् के पास वह मुँसे को साफ़ नया करेगी ? मुँसे भारी ।

भानम्

मुँसे से भियेवन कब ।

धीमता से भाने बड़कर बालि-तनाधि में भीन
मुँसे से भियेवन करता है ।

भानम्

भववम् मुँसे सहित एक स्त्री भानम् के नीतर बनी था रही
है ।

मुँसे

दो क क्यों रखा है, भाने हो उठे ।

भानम्

मुँसे को भी से भाने बें ?

मुँसे

मुँसे में उसका मोह है तो से भाने हो ।

भानम्

(लोमह की इमारे के बाल बुला कर) लोमह से धापो उठे ।

लोमह

मुँसे सहित ?

धानन्य

हाँ ।

सोमत्र

गुरुदेव का आदेश है ?

धानन्य

और क्या धानन्य ऐसा आदेश देने का साहस कर सकता है ?

सोमत्र

(सोमत्र प्रोम्ता से जाकर लौट आता है) वह था रही है ।

धानन्य, वह था रही है । कौसी घाँधी सी बसी था रही है !

धानन्य

(डेढ़ कर) धरे इतनी बड़ी लाघ ! क्यों यह लिये है उसे मला ?

दृष्या अपने जाकर की लाघ को बुझाओं में भरे प्रवेश करती है । बात्र उसके घस्तप्यस्त हो रहे हैं । बाल बिजरे हैं । मुख की काँति विहृत है । लंबि लंबि बग धरती हुई बह जाती है ।

दृष्या

मैं गरीबनी अपने बच्चे को दबा नहीं दे सकी उसका उपचार नहीं कर सकी । मेरी घाँसों का तारा धीपघ बिना इस दृष्या को पहुँच गया । कोई इसे धीपघ से कोई इसे बचा सो । कोई दुनिया

कृपा पर दया करो ।

धामन्य

किसको प्रीत्य दिसाती हो कृपा ।

कृपा

अपने बच्चे को अपने इस सास को ! धमए इसे प्रीत्य वो ।

पूत बच्चे का मुह चुम्बती है ।

धामन्य

इस शरीर में अब प्राण नहीं हैं, कृपा । प्राण बिना शरीर मिट्टी होता है । यह वो मिट्टी है, तुम्हारा बच्चा यह नहीं है ।

कृपा

यह मिट्टी है, मेरा बच्चा नहीं है !

धामन्य

यही बात है । मिट्टी के लिए कृपा मोह मत करो । मिट्टी को मिट्टी में मिस जाने के लिए छोड़ दो ।

कृपा

धमए, मैं बिलय करती हूँ । माता की दृष्टि से एक बाप इस शरीर को देखो । फिर कहो कि यह मिट्टी है ।

धामन्य

इस दुनिया में सत्य को सत्य माने बिना मिस्तार नहीं । इस मिट्टी से बिपटी रह कर तुम पुत्र को नहीं पा सकती ।

कृष्णा

मैं पा सकती तो यहाँ क्यों आती भाई ? मुझे भगवान के पास
 जानो । वे मेरी ब्यथा को समझेंगे । मेरे बच्चे को प्रीपथ देंगे ।
 समुत्संजीवनी पीकर वह उठ बैठेगा ।

भगवान

भगवान् इधर बिराजते हैं, कृष्णा ।

कृष्णा को पुत्ररथ के सामने कर देता है ।

कृष्णा

भगवान् मेरे पुत्र को प्रीपथ दो ।

पुत्ररथ

भवस्य दू मा ।

हाथ से धाम्त होने का इस्सारा करते हैं ।

कृष्णा

मैं धाम्त कैसे रहूँ देव मेरा बच्चा हाथ, वह साँस भी तो नहीं
 लेता । एक प्रीपथ बिना वह यों हो रहा है— मेरा साक्ष ! हिलता
 डोसता भी नहीं !

पुत्ररथ

कृष्णा तुम सचमुच इस बालक को जीवित देखना चाहती हो ?

कृष्णा

(कुछ धाम्त हीकर) हे भवस्यपुत्र प्राय भी ऐसा बूझते हैं ।

कौन ऐसी मां होगी जो अपने बच्चे को हंसता-खेलता न देखना चाहे ।

कुटुंबेय

यह ठीक है परन्तु सब माताएँ तभी तक बच्चे से मोह कटती हैं जब तक वह जीवित है । मर जाने पर तुम्हारी तरह कोई उसे बिपटायें नहीं फिरती ।

कृशा

हृषय नहीं मानता है मेरा । मैं उसे हंसता-खेलता देखना चाहती हूँ भववन् ।

कुटुंबेय

धार्मिक बात चाहती हो तुम ।

कृशा

इतना भी धार्मिक नहीं कर सकते हैं धाप । धाप तथागत कहलाते हैं अमृतपुत्र । बड़ी प्रशंसा सुन कर मैं घाई हूँ भववन् । धाप भी मुझे निराश करेंगे ?

कुटुंबेय

निराश करूँगा यह मैंने कब कहा है ?

कृशा

तो है दयानिधान, मेरे ऊपर तरस जाओ । मेरे बालक के गले में दो घूँव अमृत डाल दो । वह भी उठे ।

बुद्धदेव

वही होगा । कृपा गौतमी बही होगा ।

कृशा

कृशागौतमी आपके चरणों में गिरती है देव । बस्ती करें ।
धीधता करें । एक क्षण भी धर प्रसन्न है स्वामी ।

बुद्धदेव

दुनियाँ के प्रादि से अब तक जो कमी नहीं हुआ बही तुम
चाहती हो कृपा ।

कृशा

जो कुछ भी हो । आप बस्ती करें कृपानिधान । मेरा धोरक
छूटा जा रहा है । साक्षात् मगवान् की शरण आने पर भी इतनी
बेच ?

बुद्धदेव

कुछ धर नहीं है । अभी एव क्षण में वही होगा जो इस मृत्यु
लोक में कमी नहीं हुआ ।

कृशा

धर्मवाद । धर्मवाद । बस्ती करें प्रभो ।

बालक की माता की पृथ्वी पर सिदा देती है ।

बुद्धदेव

अभी तो लेकिन अब इतना धो करो कृशागौतमी...

कृष्ण

गुणधेय धाम्ना श्रीजिये । में अपनी बच्चे का जीवन पाने के लिए क्या नहीं कर सकूंगी ? बोलिये बोलिये प्रभो ।

बुद्धदेव

कोई बड़ा काम नहीं है । तुम जाकर किसी गृहस्थ के घर से थोड़ी सी सरसों ले आओ । से आ सकोगी ?

कृष्ण

(प्रसन्न होकर) यह कौन बड़ी बात है । मैं अभी आती हूँ ।
बाग़े को उधर होती है ।

बुद्धदेव

परन्तु तुमो देखो—सरसों ऐसे घर से लाता जहाँ कभी कोई मरना न हो ।

कृष्ण

यही करूंगी ।— अभी सेकर आती हूँ । अभी, दो क्षण में ।
सीधता से निष्कल; धाम्ना का प्रवेद्य ।

धाम्ना

देव, मृत बासक भी उठेया ?

बुद्धदेव

कृष्ण सरसों से आयेगी ?

प्रानन्द

यदि से प्राये ?

शुद्धदेव

तो भी उठेगा ।

प्रानन्द

असौक्यिक बात होगी । लोगों के बिस्वास हिंस उठेंगे ।

शुद्धदेव

थोड़ा ठहरो, देलो । शुद्ध का प्रयास बिस्वासें को हिंसाने के लिए नहीं आमाने के लिए है ।

प्रानन्द

किन्तु गुस्सेव ।

शुद्धदेव

शुद्ध आदू नहीं आनता प्रानन्द ।

प्रानन्द

यह तो आदू से भी बिस्मयकर होगा ।

शुद्धदेव

बिस्मय की इसमें कोई बात नहीं है । प्रानन्द शुद्ध सत्य को लेकर अभी कृपा आनेवासी है ।

प्रानन्द

समस्त वैतवन में श्रीर नगर में भी इस समय वही वर्षा है ।

भगवान् कसा के मृत बासक को बीबनबाम दे रहे हैं।

बुद्धदेव

(तात्पर्य) बात यही तक पहुँच गई है !

प्रानंब

हाँ बुद्धदेव देखिए न चारों घोर जनसागर उमड़ा जला घा
रहा है ।

बुद्धदेव

(इष्टि पुमाकर देखते हैं) प्रानंब, तुम ठीक कहते हो, परन्तु
यह छोटी सी बात, उसके लिए बुनियाँ इतनी घातुर हो रही है !

प्रानम्ब

यह कुछ बात नहीं है प्रभो । प्रसंमब को समब होते
देखने से बढ़कर बड़ी घोर प्रचरब की बात क्या हो सकती है

बुद्धदेव

(वंशीप्ला से) हैं ।

प्रानंब

परन्तु कहीं ऐसा न हो ।—

बुद्धदेव

अर्थात् सबको निराश बना पड़े । कृशा का मृत्यु को
हुमा बासक भी न उठे ?

प्रानन्द

हाँ भयवाम्, यदि ऐसा हुआ तो बड़ा भयनाद फलेगा ।

बुढ़बेव

डरने की कोई बात नहीं है प्रानन्द । बुढ़ा गोमती की सफ़सला असफ़सला पर गड़ कुछ निर्भर करता है । — वही देख सगाई उसने । देखो आरही है कि नहीं ।

प्रानन्द

(अच्छी तरह दूर तक आरों ओर देखकर) अभी तो कहीं नजर नहीं आ रही है ।

बुढ़बेव

वहाँ मे नजर आये । बेचारी मोक्षाप मारी !

(तानु ताण्डियों कीर नर नाटियों की भीड़ से अतबन तयाराम भर जाता है । सोय अक्षस्वर से बिस्मले हैं 'मगवान् बुढ़ की जय हो । बुढ़ विशिष्ट व्यक्ति आये । बड़कर वहाँ तक आयाते हैं जहाँ बुढ़ा का मृत बालक पड़ा है । कोई कोई यह देखने का प्रयत्न करते हैं कि बालक मरा भी है या नहीं ।)

प्रानन्द

(अडे होकर हाथ ऊँचे करके भीड़ से बैठने का आदेश करता है ।) बैठ जाओ भाई । मगवान् तयागन की 'दृष्टा है कि सब सोय वृत्तों की छाया में शान्ति से बैठ जायें ।

१९]

(पचिकाम लीप बैठ जाती है । पचामक लीड में कोलाहल मचता है । सब कहते हैं 'हुसा घाटही है । हुसा घाटही है ।)

प्रामन्व

(घासों के घागे हुसेली की छाया करके दूर से घाती हुसा को गहचाम कर) हुसा गीतमी घा रही है देव ।

बुद्धदेव

(निर्बिकार भाव से) घाने दो ।

(कबों कबों हुसा लनीप घाती जाती है लीड में कोलाहल बढ़ता जाता है हुसा जेतबन में प्रगोस करके भगवान् बुद्ध को समीप पहुँच जाती है ।)

प्रामन्व

(हुसा को लकव कर) हुसा गीतमी, भगवान् इधर बिराबते हैं ।

(हुसा भगवान् को सामने जाती है)

बुद्धदेव

(गंभीर स्वर से) हुसा गीतमी, घाघो । मेरा बिषाण है धबदब ही तुम घरसों से घाई होगी ।

हुसा

(घबने बोलीं जाती हाव ऊपर उठाकर) कहां से घाई मयबम् ।

बुद्धदेव

(कुछ घाघचर्य का भाव दिखाकर) कबों, घरे घतने बड़े

जनाकीर्ण नगर में से तुम एक मुट्टी सरसों भी नहीं ला सकी !

हृशा

(निराश भाव से) नहीं भगवन् नहीं ला सकी । मैं एक सिरे से दूसरे तक घूम आई । कहीं कोई घर नहीं मिला जहाँ सरसों मिला सकती ।

शुद्धदेव

यह कैसी बात ! इतने बड़े नगर में मुट्टी सरसों नहीं !

हृशा

सरसों बहुत है पर मृत्यु से घब्रूता घर एक भी नहीं ।

शुद्धदेव

मृत्यु से घब्रूना एक भी घर नहीं !

हृशा

मृत्यु सभी घरों में भाँक चुकी है भगवन् । कहीं से पुत्र कहीं से पति कहीं से पत्नी, कहीं से पुत्री कहीं से पिता कहीं से माता को वह से जा चुकी है ।

शुद्धदेव

तब ।

हृशा

तब गया, मृत्यु का चक्र बराबर चल रहा है । कोई भी — गृहस्थ सबसे मुँह नहीं ।

कुडरेव

कुडा गीमती के बालक का क्या होगा ?

कुडा

होया क्या ? जिस शरीर का मृत्यु अमिबार्म परिव्याम है उसका क्या होने को है ? उसके लिए शोक ही क्या प्रतीत होता है ।

कुडरेव

(प्रसन्न होकर) इतना गमगद गई हो तुम !

कुडा

भते ! आपकी दुगा से मुझे सहज ही ज्ञान का आलोक मिल गया ! अमरत्व को देने वाली शुभ दृष्टि ही मैं इस समय सम्पन्न हूँ ।

कुडरेव

(मृत शरीर की ओर दृष्टि करके) उसके लिए तुम्हें शोक नहीं है क्या ?

कुडा

शरीर जो मृत्यु का घास है उसके लिए मैं शोक करूँ ? क्यों मैं मैं उन आत्मा का अभिनन्दन करूँ जो निरव्य है जो अमृत है ।

कुडरेव

यही हो यही हो । अमरत्व को देने वाले धर्म अष्टांगिक

मार्ग की अधिकारिल्ली बनो कृपा ।

कृपा

भगवान् मुझे प्रव्रज्या दे । मैं बुद्ध धर्म और संघ को शरण
जाती हूँ ।

बुद्धदेव

कृपा, कल्याणी ! तुम दस बीबरबारिल्ली भिक्षुणियों में
अग्रणी बनो । धर्म में तुम्हारी प्रवृत्ति हो । अमृतपूजिके,
आप्तो मृत्यु घोर शोक की इस दुनियाँ में तुम शरणत भानन्द
की उद्योति अनाप्तो ।

कृपा

(प्रसन्नकरती हुई) बुद्ध का जय हो, धर्म की जय हो
संघ की जय हा ।

(उपस्थित जनसागर में रह रहकर यही वाक्य शोहराये जाते हैं । तुम
कठ से निःसृत अक्षय से आकाश गुन उच्यते हैं । ध्यानद आकर
भगवान् के शरणों में विरता हैं ।)

बुद्धदेव

क्यों भानन्द क्या बात है ?

भानन्द

संशय के बादल छिन्न भिन्न हो गये हैं देव ! मुझ अग्रजानु ---
को शमा करें ।

रचनाशाला
विलम्ब १९४६

लाख का घर

कुन्ती	पात्र पांडव माता
धामा युधिष्ठिर पांचाली	स्मृति-पात्र सत्या ब्राह्मणी का प्रेत कुन्ती का व्येष्ठ पुत्र पांडवों की स्त्री पांचाल देव की रत्नकुमारी
धर्मज	युधिष्ठिर का मार्ग महाभारत का प्रसिद्ध योद्धा
भीम	कुन्ती का पुत्र महाभारत का योद्धा

धर्मराज

निबिड धन्यकार धनपीर सूर्यता में सारा जगत छो रहा । बापु स्तम्भ । बुल मुक । नदी का प्रवाह स्थिर । माता कुली की छाँवों में निगा नहीं । हृदय मन धीर नाकी—सम्पन्न प्रपूर्व हृत्कल से धारोभित । बहानाप्त के यद्यस्ती कियेता बुजों की जननी धपने धपनकल से भिन्न प्रकृति की गोद में हृदय का संभल करती हुई बीत रही है ।]

कुन्ती

धर्मराज धर्मराज ! (कोई उत्तर न बाकर) धात्रि धर्म की जप हुई । धर्म का नाग हुआ । इनक निवा क्या होना था ? राजमाता कुन्ती के लिए न निग उमक यशस्वी पुत्रों के धर्म का उधार किया । ध । मु० पृथ्वी के स्वामिओं की माता को आज किस बात की कमी है ? उसक इशारे पर आज उसके पराक्रमी बेटे परती से स्वर्ग तक स्वर्खुण्ड तयार कर सकते हैं । धर्मराज धर्मराज ! बच्चा तुम्हारी माता नदेह स्वर्ग जा मा गहतो है । धर्म का लमा सेतु बनाओ कि उतारा मार्ग सुगकर ।

(उतके तापने लहमा एक स्त्री की धाया बकट होगी है ।)

कुन्ती

(रात्रि की शांति को बहुलाती हुई) भीम भीम !

छाया

भीम से मैं डरती नहीं हूँ ।

कुन्ती

यजु न, भरे घो पार्य, तेरा गांडीव कहां गया रे ?

छाया

गांडीव हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता— राजमाता !

कुन्ती

अभी हमारा धम इतना दीर्घ नहीं हुआ है। गांडीव के बिना केवल धम के प्रताप से ही तुम्हें ठीक किया जा सकता है।

छाया

धर्मराज की माता, माह धम की बात कहो ही तुम ।

कुन्ती

धर्म की बात हम नहीं करेगा तो कौन करेगा ? धर्म का सहारा लिए बिना कोई इतना बड़ा यज्ञ जीत सकता है ?

छाया

धर्म और पुत्र्य के बल पर ही तुमने महाभारत जीता है ?

कुन्ती

देखा नहीं तुमने ? लोग शोकान्तर में विख्यात धर्मराज की

धर्मपरवा के बिना क्या यह सब संभव हो सकता था ?

दाया

हा-हा-हा !

कुन्ती

तुम धर्म का उपहास करती हो !

(कुछ तन्त्रमा जाता है ।)

दाया

राममाया पैसों से जिसे तुमने खरीना है वह धर्म नहीं है ।
उप धर्म से महामारत जीतने का तुम्हारा गर्व मिथ्या है ।

कुन्ती

क्या कहा ?

दाया

बिभ्रमित न हो कुन्ती ! सुनो हम गरीबों के रक्त पर
घाम तुम्हारे साम्राज्य नींव की मढ़ी है ।

कुन्ती

दि सि । धर्मराज के लिए ऐसे कुवाच्य ।

(कारों पर हाथ रखती है)

दाया

कारों को बिगना ही बंद करसो रानी, लेकिन यह तथ्य
तुम्हें सुनना घोर मानना पड़ेगा कि साम्राज्य का वैभव उप घोर

— स्थाय से नहीं प्राप्त हुआ है।

कुम्ती

तुम्हारे भाषीर्वाच से हुआ है ?

छाया

हमारे भाषीर्वाच से न सही हम जैतों के बसिदान से सही ।
हमारे रक्त की होसी खेस कर घर्म की यह ध्वजा इतनी ऊँची
फहराई गई है ।

कुम्ती

इस तरह उर्द्व भाव से मु ह बसाये जाने वाली तुम कौन
हो गयी ?

छाया

गर्भ के पहाड़ पर बठी हुई तुम्हें बताना पड़ेगा कि मैं कौन
हूँ । यच्छा तो देखो— (इधारा करती है शून्य में एक विघात भवन
की कपरेका प्रकट होती है ।)

कुम्ती

(आश्चर्य से बयती होकर बिल्लाती है) सास का घर ।
वारणाबत में सास का घर ! दुग् शक्तियों की रचना । घोड़ कैसा
जस, कैसा भयानक पड़य त था वह !

छाया

मैंने कहा था न कि तुम भूस नहीं सकती मुझे ।

कुम्ती

पर तुम कौन हो ? सास के घर से तुम्हारा संबंध ?

छाया

ममसे मत पूछो देगती बाघो— (बाँधों बाँधव धीर कुम्ती सास के घर में बहूबोध की तैयारी में लगे दिखाई देते हैं। एक गरीब बाघूली अपने बाँध पुत्रों के साथ घाती है।)

कुम्ती

(तिरसे दर तक बसने से तर हो जाती है।) सरवा बाहूखो !
(छाया की ओर देखती है।) घरे ! तुम्हीं तो हो — तुम्हारे ही प्रतिस्मृति तो सरवा है !

छाया

(कुछ से कुछ न कहकर उठी धीर इमित करती है। तब बाघूली को भोजनोपरान्त बहूने के लिए कुम्ती बड़ घाघह से रोक रही है। तुम्हारे रसमी बिद्योनों पर मां बेटों को सजग करने को कहती है। वे भी बसते हैं। अन्न पत्रि का हस्य। भीम मशाम लेकर घाय लगतते हैं। बाँधों बाँधव धीर कु ती उठे नदर कर रहे हैं। घाय भव कर बँध से चलती है। भीतर बाघूली सहित उनके बाँधों मड़के छटपटते हुए चलते हैं।)
देसो, देखो कुम्ती घपने घर्म के कुङ्कर्यों को ब्रिमके लिए तुम्हारे गर्व का पार नहीं।

कुम्ती

(घाघेन में घाय की ओर शोकती हुई) बचाओ बचाओ !

सत्या धीर उसके बेटों को ।

छाया

हा-हा-हा राजभाटा कुस्ती । धीर मत हो । इन्हीं धर्म और पुण्य के क्षमों पर सबेह स्वर्ग जाने का सेतु बनेगा । सुभाषो अपने धर्ममूर्ति धर्मराज की बहू भी तुम्हारे साथ साथ अपने कीर्तिकथाओं की प्रसन्नियत का पापमोहन कर से ।

कुस्ती

धर्मराज, धर्मराज बेटा शीड़ो । अपनी माता के विश्वास की भीठ को उहने से पहले बधालो ।

छाया

(अपने बेटों से) सत्यासुतो अपना प्रमियोग राज उभ स्थित करो । प्रपञ्च के आधार पर रखी हुई विश्वास की नींव बगमपाने लयी है ।

सत्यासुत

(हाथ ऊँचे करके बिनाये हैं) पाण्डवों के जिस राज्य को धर्मराज कहा जाता है उस पर ब्रह्महत्याजैमे सेकड़ों कर्मक सगे हुए हैं ।

कुस्ती

यदि यह सत्य है यदि यह प्रमाण है, तो स्वर्गसिद्ध के बचाव नर्क-द्वार बरण करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं । परे,

कितना मिथ्या समझ था मैंने !

छाया

मिथ्या, एकान्त मिथ्या । एक परोक्ष साह्यणो और पाँव
साह्यणुमारों की हत्या करके तुमने अपने प्राण बचाये ।

बन्ती

मुझे दुःख है सत्या मुझे दुःख है ।

छाया

दुःख, हा-हा । दख बड़े भावमियों को नहीं होता बिनका
इतिहास इसी तरह के पापाचारों से निर्मित होता है ।

बन्ती

तो क्या हमारे जीवन में गर्व करने मायक दुःख भी
नहीं है ?

छाया

दुःख भी नहीं एक धंसा भी नहीं ।

बन्ती

तो इस अकारण जीवन को पीकर मैं क्या करूँ ?

छाया

तुम्हारा और तुम्हारे यद्यत्को बेटों का जीवन पाप की
एक सम्बन्धी कहानी है । दुनियाँ में कितना ही बर्ष और कितना

ही बैसब प्रवर्धित करो, भास्त्रिह इस प्रबन्धना को नष्ट
होना है—। इतनी बल्दी तुम अपने पापों से छुट नहीं
सकती

[सत्या अपने पापों के लिये सहित प्रहरण ही जाती है ।]

कृष्णी

(आकाश को कम्पित करनेवाली बीच से रात्रि की नय कण्ठा
की प्रकृत पुला कर देती है ।) बचाओ, बचाओ । पार्य इस भय
कर भय से जो चारों ओर लग रही है अपनी माता की
रक्षा करो ।

इधर धर धाकती है । परदे के बीच कोनाहल होता है । प्रभु न
बांचाली भीम पुष्पिष्ठिर क्षत्री बीकते भाकते मज पर धा जाती है ।

प्रभु न

माता, कहाँ हो ?

पांचामी

माता, कहाँ हो ?

भीम

माता, कहाँ हो ?

पुष्पिष्ठिर

मातेखरी हम धा गये ।

कृष्णी

रक्षा करो ।

— संभ्रामुन्य होकर धरती पर गिरती है । सब बीक कर हाथों हाथ
परे बछते है ।

पर्वा

ਦੇਸ਼ਮਾਫ਼ਾਮ
ਸੰ ੧੯੪੧

ਹਰ

राम
कीशल्या
सीता
मांझी
उर्मिसा

मद

अयोध्या के राजा दशरथ के बेटे
राम की माता
राम की पत्नी
राम के भाई भरत की पत्नी
राम के छोटे भाई लक्ष्मण की पत्नी
श्रीर बासी भादि

अयोध्या का राममहल

सूत्रोपम से पूरे

रामजी बस्य पहले सोता इधर उधर फिर रही हैं। जहाँ कोई भी
जगता उसे धारण बैठती हैं। घर की बातियाँ भी बाप में लगी हैं। मी
से एक बन्ती धरती है।

दासी

स्वामिनी, माता कोशल्या ने कहसाया है कि आप रात
आपनी रही हैं। थोड़ा विद्याम कर सें।

सीता

माताजी ने कौन साक सगा सी है? वे भी तो आप
रही हैं।

दासी

आपको धर्म अधिपति के कार्य में बैठना होगा।

सीता

आनतो है पर धर्म कितने काम पड़ है।

दासी

हम भोगों को बठा दीजिए। हम कर सेंगी।

सीता

अवश्य, लेकिन मेरा रहना तो बरूची है ।

बासी

आपका एक बार आवेस ही काफी है ।

सीता

प्रच्छा देखो, अभियेक के नए आवश्यक सामग्री पहुंच गई है । केवल तीर्थजल पूर्वा, रोसी और अन्नत मेकने खेब है ।

बासी

जो आता ।

सीता

और सुनो । देखो आर्यपुत्र गुरु बशिष्ठ का आशीर्वाद पाकर ज्यों ही आर्य त्यों ही मुझे बताना ।

[जाने का नाम्य]

बासी

जो आता

सीता

(लोटकर) देखो अभियेक के समय पहनने के लिए आर्यपुत्र के वस्त्र कहाँ रखे हैं तुम्हें मामूम है । देकर सम्मल जित्त समय मनिं तुरन्त है देना ।

बासी

जो घासा ।

सीता

माडबी, उमिला और श्रुतिकीर्ति को कहसा दो कि वे
बरा मुझसे धमी आकर मिस सें । पोछे निमन्त्रित महिमाए, भाने
घाने सभ आयंमी ।

बासी

जो घासा ।

सीता

महीं ठहरी उम्हें मेरे पास मत बुसाओ । केवल इतना
कहसा दो कि देवी अरुन्धती के भासम के पास ही माता
कौसल्या का भासम हेगा । मन्सरी माँ से मैने पुछवावा है ।
जात होने पर कहसू दूगी ।

[जाने की होती है]

बासी

जो घासा ।

सीता

एक बात धीर । देखा, द्वार से कोई याचक रासी हाथ
सौटकर न आय । जो कोई जो कुछ मार्गें बसे बही दिया
जाय ।

अस्वान, बासी अन्ध दलितों को बुलाकर ऊपर की खारी अस्वान

धर्मपरता के बिना क्या यह सब संभव हो सकता था ?

दाया

हा-हा-हा !

कुन्ता

तुम धर्म का उपहास करती हो !

(चुह समतला जाता है ।)

दाया

राजमाना, वेशों के जिसे तुमन खरीता है वह धर्म नहीं है ।
उस धर्म से महाभारत भीमने का तुम्हारा गर्व मिथ्या है ।

कुन्तो

क्या कहा ?

दाया

विभ्रमित न हो कुन्तो ! सुनो हम गरीबों के रक्त पर
घाव तुम्हारे साम्राज्य नींव की सड़ी है ।

कुन्ती

छि छि । धर्मराज के लिए ऐसे कुवाण्य ।

(कानों पर हाथ रखती है)

दाया

कानों को बिनना ही बन्द करसो राती, मेकिन यह तथ्य
तुम्हें सुनना भीर मानना पड़ेगा कि साम्राज्य का संभव तप भीर

सत्या और उसके बेटों को ।

घाया

हा-हा-हा राजमाता कुन्ती ! प्रधीर मत हो । इन्हीं
घमं और पुष्प के खंभों पर सदेह स्वर्ग जाने का सेतु बनगा ।
बुलाओ अपने घर्ममूर्ति धर्मराज को वह भी तुम्हारे साथ साथ
अपने कीलकसारों की प्रसन्नियत वा घ्राणसोदन कर सै ।

कस्ती

धर्मराज धर्मराज बेटा दौड़ो । अपनी माता के विश्वास
की भीत को डहने से पहले बचालो ।

घाया

(अपने बेटों से) सरवासुतो अपना प्रमिदोग पत्र उप
स्थित करो । प्रपन्न के आघार पर रबी हुई बिदबास की नीव
पगाने लगी है ।

सरवासुत

(हाथ ऊंचे करके बिजगाने हैं) पाण्डवों के जिस राज्य
को धर्मराज बहा जाता है उस पर अज्ञहत्या जैसे संकड़ों कंसक
मगे हुए हैं ।

कस्ती

यदि यह राज्य है यदि यह प्रमाण है तो स्वर्गित के
बजाय मर्क-शर बरण करने में मुझे बार्द प्रार्थित नहीं । परे,

कितना मिथ्या समझा था मैंने !

छाया

मिथ्या एकान्त मिथ्या । एक परोब ब्राह्मणी और पाँच ब्राह्मणकुमारों की हत्या करके तुमने अपने प्राण बचाये !

कुन्ती

मुझे दुःख है सत्या मृत्यु दुःख है ।

छाया

दुःख, हा-हा । दस बड़े प्राणियों को नहीं होता बिनका इतिहास इसी तरह के पापाचारों से निमित्त होता है ।

कुन्ती

तो क्या हमारे जीवन में गर्व करने सामक कुछ भी नहीं है ?

छाया

कुछ भी नहीं एक घण्टा भी नहीं ।

कुन्ती

तो इस धनारण्य जीवन को छोड़कर मैं क्या करूँ ?

छाया

तुम्हारा और तुम्हारे यक्षस्त्री बेटों का जीवन पाप की एक लम्बी कहानी है । दुनियाँ में कितना ही दर्प और कितना

कर]

ही बेमेल प्रदर्शित करो, इसलिए इस प्रबंधना को नाश
होना है—। इतनी जल्दी तुम अपने पापों से छुट नहीं
सकती

[तब्या अपने पापों के हों लहित प्रहस्य हो जाती है ।]

कुन्ती

(आकाश को कम्पित करनेवाली शीत से रात्रि की तप कर...
को प्रलम्ब गुला कर देती है ।) बचाओ, बचाओ । पार्य इस वर्ष
कर भ्रम से जो चारों ओर तप रही है अपनी माता की
रक्षा करो ।

इधर उधर जापती है । परचे के पीछे कीलाहन होता है । यजुंन,
बांचाली भीम युधिष्ठिर सभी हीकते जापते मंच पर भा जाते हैं ।

यजुंन

माता, कहाँ हो ?

पांचाली

माता, कहाँ हो ?

भीम

माता, कहाँ हो ?

युधिष्ठिर

मातेश्वरी हम भा गये ।

कुन्ती

रक्षा.....करो ।

- लंकागुह्य होकर भरती पर फिरती है । तब हीक कर हाथों हाथ
उठे बजाते हैं ।

पर्दा

एवमाकाल
मई १९४१

हठ

समझाती थीर उन्हें एक एक कर भिजती है । जमिना का प्रवेश ।

जमिना

भीजी तो महो भी नहीं । मैं कद की हूँ पर घाब
... पता ही नहीं लगता ।

बासी

(हाथ जोड़कर) स्वामिनी, धर्मो धरने मन्दिर में पधारो
हैं । घाब रात भर एक पल को भी विद्याम नहीं किया ।

जमिना

विद्याम कैसे कर पातीं ? उन्हें विद्याम का समय कहाँ
है ?

बासी

घाब समके पास आएँगी ?

जमिना

नहीं । घाब से यह है तो उन्हें पोड़ा बैग से सेने दें ।

बासी

स्वामिनी ने यात्रकों को मुहु-माया दान देने तथा बेबी
धरुयती के नाम ही माता कौतरुया का धारण रखने का आदेश
दिया है

उर्मिला

ऐसा ही किया गया है ।

एक घोर से उर्मिला घोर बासी का धार्ये-बीछे प्रस्थान । हुतरी
घोर से सीता का प्रवेश

सूर्य भगवान् अपने वध का महात्मव देखने के लिए कैसे
सुसज्जित होकर घा रहे हैं । बादलों की ऐसी घोमा तो मैं पहली
बार घाब देस रही हूँ । उदयाबल के छिस्तर पर घाब किसी ने
बंदनवारें बांध दी हैं ।

[मांडवी का प्रवेश

मांडवी

बीबी, घाब घापबो कोई काम नहीं करना है ।

सीता

(हंसकर) क्यों माता कीचन्ना का घाबेस है ?

मांडवी

नहीं, देवी घाग्न्यती ने कहुमाया है कि घाप बहुत घ्यस्त
हो रही हैं । थक धार्यंगी ।

सीता

घौर तुम मान लेनी हो । तुम बड़ी भोसी हो मांडवी !

मांडवी

(गुस्करा कर) देवी घाग्न्यती स्वयं बूढ हैं । इसलिए
ऐसा समझनी है ।— पर जब उन्हेंने कहा तो मैं क्या करती ?

सीता

(हंसती हुई) अफ़स़ा उमको जाकर कह देना कि उमकी
प्राज्ञा शिरोधार्य है ।

मांडवी

जीजी !

सीता

कहो ।

मांडवी

जीजी, आज - (रुक जाती है ।)

सीता

कहो बहिन मांडवी, कहो ।

मांडवी

आज का दिन कितना धन्य है । कितना सुहावना है जीजी !

सीता

हाँ बहिन । सब मुझसे कहते हैं धाराम करो विधाम
करो । काम मत करो । परिधम न करो । बक जाओगी, पर
मुझ में आज धकावट का नाम नहीं । शरीर में जीवन और
धानस्य का सागर उमड़ पड़ा है । जो होगा है सारे काम अपने
हार्थों से कर डालू किसी को कुछ भी न करने दूँ ।

मांडवी

हाँ जीजी, ऐसा ही है । परती तथा धकाध आज दोनों

हृषीकेश भीरु वरसाह से घा रहे हैं। तो भी मेरा मन न जाने क्यों संकित ही हो उठता है। कमो तो ऐसा नहीं होता था।

सीता

कुछ नहीं बहिन ! देबर नगसास से नहीं भा पाये हैं। इसीसे तेरा जो जबाब हो रहा होगा।

माँडवी

तो बात नहीं, जानी। मान यों ही कुछ भी ब्याकुल था है।

सीता

भगवान् सब संवस करेगे।

माँडवी

(चुप रहती है।)

सीता

मेरा भी हृदय काँप रहा है। ज्यों ज्यों अश्विनेक का समय समीप आ रहा है। मुझे अब सा लग रहा है। अनेक कामों में असफल मैं उसे बहुमाना चाहती हूँ पर अश्विनेक के सामने से वह हृदय मोहन ही नहीं होता। यहो लपटा है कि अश्विनेक पुत्र विहासन पर बैठे हैं। छत्र उनके मस्तक पर रखता है गुरु अधिष्ठ के किये हुए तिनक से उनका माया घोषित है अश्विनेक से दारो बनिउ है। मैं उनके बाईं ओर बैठी हूँ। मैं

सीता

अपराध क्षमा हो । परन्तु कोई कारण रहा होगा ?

राम

बकर । पिताजी ने मन्मथी माँ को कभी दो वरदान देने का बचन दिया था । उन्होंने आज अपने वे वरदान माँव सिमे ।

सीता

तो मन्मथी माँ ने कहा है कि अभियेक न हो ?

राम

। नहीं मन्मथी माँ ने कहा कि अभियेक जैसा भारत का ही ।

सीता

(सत्य होकर) बस ।

राम

बस क्यों लड़कने लह भी जाहा कि मैं जोइह बर्द तक बजबास करू

सीता

तुं ! (बर्दित होना बाहरी है)

राम

(हाथों से सीता को संभालते हैं) प्यारी, धीरज धरो । क्या यह समय दुःखी होने का है ?

सीता

(अपने को संभल कर) धर्मपुत्र ! हाय यह क्या का क्या हो गया ? मझनी मां मैं इस हरी-हरी दूब में चरन की स्वतन्त्रता देकर हमारा घात क्यों किया ? पहले ही बरदान क्यों न मांग लिये ?

राम

प्यारी जानकी मैं यह नहीं जानता था कि तुम्हें एतना इतना प्यारा है। यदि जानता तो हाथ जोड़कर उसे मझनी मां से तुम्हारे लिए मांग साता — मुझे तो क्यास मो न था कि मैं तुम्हें इतनी व्याकुल देखूंगा !

सीता

धर्मपुत्र ! सीता को राम की कामना नहीं। बनवास का भय नहीं। परन्तु धर्मियेक के अन्तिम क्षण मैं मां को यह क्या सूझा ? इस ठमाम धर्मोन्नत का क्या होगा ? प्रजा हम सब लोगों को क्या कहेगी ? सच्चा से मेरा तिर पूरबी मैं गड़ा था रहा है।

राम

प्यारी ! इसमें किसी का दोष नहीं। भावो बसवान होती है। मझनी मां तो एक निमित्त मात्र हैं।

सीता
 धार्यपुत्र ठीक कहते हो पर मन में तो विचार घायै बिना।
 नहीं रहते ।

राम

प्रिये साबधान हो और उन विचारों को छोड़ो ।— अब
 बताओ मेरे बतवास के समय तुम यहाँ किस प्रकार रहोगी ? मेरे
 जाने से पिताजी को दुःख होगा । माता कौसल्या व्याकुल होंगी ।
 उस समय तुम्हीं उनका सहारा होगी ।

सीता

धार्यपुत्र के मुह से मैं क्या सुन रही हूँ ? दुनियाँ धापको
 धर्म-शुचीण कहती है । स्त्रो का धर्म क्या है सो धाप मुझसे
 अधिक जानते हैं ।

राम

सीता, प्रिये ! मैं अपने और तुम्हारे हित की बात
 कहता हूँ ।

सीता

स्वामी, परन्तु पत्नी का हित क्या उसके पति के हित में
 नहीं है ? क्या पत्नी पति की धर्मापिनी नहीं है ? क्या यह अपने
 धर्ता के भाग्य को नहीं भोगती है ?

राम

परम्यु प्रिये ! पत्नी का यह भी धर्म है कि वह अपने स्वामी का प्रिय साधन करे । अपने सास-ससुर के चरणों की सेवा करे । उनके आशीर्वाद प्राप्त करे । बड़ों के आशीर्वाद वही से बड़ी विपत्तियों का निवारण कर देते हैं ।

सीता

माय ! मैं जोमो मासो आपसे क्या कहूँ ? मैं तो इतना जानती हूँ कि मैं आपके चरणों की बासी हूँ । मेरा भाग्य उनसे बंधा है । वे राजमहलों में रूँये तो वहाँ रहकर मैं उनकी सेवा करूँगी । वे वन में आयेंगे तो वहाँ मैं उसके साथ आऊँगी । मैं उनके आगे आगे वन के कुश और काँटे बुहारती बसूँगी ।

राम

बेदेही, तुम नहीं जानती । वन का तुम्हें तनिक भी ध्यान नहीं है । तुम राजहंसिनी हो तो वन नारा समुद्र है प्रिये ! तुम वहाँ एक दिन भी नहीं रह सकती हो । बसने को वहाँ मार्य नहीं । खाने को भोजन नहीं पीने को पानी दुर्मल । नये पर बसना । मृमि पर खाना । कन्ने सुन्ने फल फल खाना । बत्कल पहनना । घोह ! वहाँ तक बहूँ ।

सीता

कह सीतिये, धार्यपुत्र ।

राम

तुम बिना देखकर डरनेवासी हो । बाघ घोर भेड़ियों के साथ कैसे रहोगी ? पक्ष पक्ष परबिपक्षर अजगर वहाँ रँवते हैं । सिंह घोर नीले भूमते हैं । कपटो कुटिल राजसों का जो बर है । जहाँ शोषहर को धरती तबे-सी जसने सगती है । जहाँ का खील पत्थरों को भी कँपा बेता है ऐसे वन में तुम्हारे रहने की बात भी मेरी कल्पना में नहीं आती ।

सीता

यह सच है स्वामी कि मैं वन के योग्य नहीं हूँ । मिथसा घोर अयोध्या के राजमहलों से बाहर दुनियाँ में क्या है यह मैं नहीं जानती । परन्तु तब यह मैं कैसे मानूँ कि आप अकेले वन में रह सकेंगे ।

राम

पिता की आज्ञा को अमान्य कैसे कर दूँ ?

सीता

मैं जो के धर्म का त्याग कर दूँ ?

राम

सीते !

सीता

माय !

राम

नहीं जानता मैं तुम्हें क्यों कर समझऊँ । तुम्हारा यह दृष्ट

कैसे दूर करू ?

सीता

समझाने को कोई बात ही नहीं है, स्वामी ! बीसह वर्ष तक प्रकृति छोड़ जाने से तो प्रच्छन्न है आप अपने हाथों से त्रिप घोल कर मुझे देते जायं । मे बकी शक्ति से इसे पीकर सो जाऊंगी ।

राम

मैंबिसी । बीसह वर्ष सुनने में ही बहुत समते हैं । लेकिन दिन जोतते देर नहीं लगती । तुम अपना जो न बियाड़ो प्रिये । मैं वनवास की प्रबधि समाप्त होते ही लौट आऊंगा ।

सीता

तो मेरी बात न सुनने का आपने प्रण कर लिया है ? 'वन में क्या आपको एक दासों की भावदयकता न होगी ? जब जलते-जलते आप धरू जायेंगे । पसीने की बूँदों आपके माथे पर झसक आयेंगी तब कुल की छाया में बैठकर मैं ही आपका ऊपर हवा करूंगी । झरने का शीतल जल साकर आपका हाथ-पैर धोऊंगी । सन्ध्या समय कंद-मूस परोस कर आपको बिसाऊंगी । रात को जब पत्तों की छाया पर आप ध्यान्त-नसान्त पढ़ रहेंगे तो मैं पीरे पीरे आपके पैर दाहूंगी ।

राम

तो तुमने यही निश्चय कर लिया है ?

सीता

तो इसके सिवा मैं धीर बचा कर सकती हूँ। वन के
 खिल कष्टों का भापने बर्णन किया है आपके साथ रहने धीर आपके
 शरणागति का बचन करने से मेरे लिए कूलों की तरह सुख
 साधक हो जायेंगे। वहाँ के पशु-पक्षियों से डरने की मुझे
 भावश्यकता नहीं है। वे सब मेरे सहायक होंगे। मैं उनके स्नेह
 की छाया में वहाँ जाऊँगी निजय विभक्त हो।— इतने पर भी आप
 मुझे यहाँ रक्षना चाहें तो मेरा शरीर ही रहेगा, प्राण नहीं
 रहेंगे। इसे सब जानिये

राम

यह बात है तो तुम मेरे साथ हो जानो। जलो, डेर न
 करो। माता कीसल्या से बस कर बिबा सेमी है।

सीता

सामुची तो इधर ही था रही हैं।

कीसल्या का श्रेय, बीता माये का शोचन ठीक करके प्रलाम
 करती है

कीसल्या

रोमाप्यवती होयो (राम के) वरत, रामचंद्र यह मैं बचा

सुन रही हूँ ?

राम

माँ यह सच है ।

कौशल्या

तब महाराज की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है ।

राम

ऐसा न कहो माता ।

कौशल्या

तो क्या कहूँ ? क्या यह कहूँ कि अभियेक न हो ? क्या यह कहूँ कि तुम प्रयोग्या छोड़ कर बनवासी हो जाओ ?

राम

यही कहो माँ—यही कहो ।

कौशल्या

नहीं यह प्रमाय मैं न होने दूँगी । मैं राजमाता हूँ, राम ! तुम पत्नी, सदा मन्म म जसा । बलिष्ठ और सुमन्त इन्कार करेंगे तो मे प्रपत्नी हाथ से तुम्हारा अभियेक करूँगी ।— क्या कैंकेयो के कहने से अभियेक रुक जायेगा ?

राम

माँ शान्त होओ ।

कौशल्या

नहीं, राम ! इस समय शान्ति की बात मत करो ।

राम

माँ, क्या तुम यह कहती हो कि मैं पिता की आज्ञा को तोड़ूँ ?

कौशल्या

राम, बेटा ! मैं तुम्हारी माँ हूँ । पिता से भी बड़ी । मेरी आज्ञा है कि तुम अश्वमेध से विमुक्त न हो । अश्वमेध से विमुक्त होना कामरता है ।

राम

कभी नहीं माँ कभी नहीं ! माता पिता की आज्ञा पालन करना कामरता नहीं हो सकती । फिर तुम्हारे लिए तो मेरा और मेधा भरत का अश्वमेध समान है । कहो क्या भरत तुम्हें मेरी ही तरह प्रिय नहीं है ?

कौशल्या

बेटा राम ! धर्म की बेश-सूया पहन कर भागे हुए अधर्म से दूतना क्यों डरते हो ?

राम

माँ, यह तो प्रसन्न होने की बात है कि तुम्हारा राम दूतना धर्मभीरु है !

कौशल्या

बरस यदि यही बात है तो मैं भी तुम्हारे साथ बन को चूसूँगी । हिम वर्षा और धाम में मैं अपने बच्चों की छाया बन

कर रहीगी । — इस अयोध्या में, स्वार्थ की इस नवरी में, एक बार भी साँस लेना सहा नहीं ।

राम

माँ मोह मत करो । पिताजी की दशा को देखो । मैं अभी देखकर आया हूँ । आह ! कैसे दोन दशा हो रही है । मेरी मनु पस्थिति में तुम्हारे सिवा घोर कौन उनसे क्षीर को रख सकेगा ?

कौशल्या

राम बत्स ! तुम सबको देखते हो पर अपनी माँ को नहीं देखते । हाय ! मैं तुम्हारे बिना क्या करूँगी ? कैसे बीयूँगी ? तुम अकेले वन में घूमोगे और मैं राजमहसो में सुख भोगूँगी । आह ! (धीरे धीरे रोती है)

राम

अकेला क्यों रहूँगा माँ ? यह मैयिस्ती भी तो मेरे साथ है ।

कौशल्या

(चौंकर) क्या कहा बेटा सुकुमारी सीता भी तुम्हारे साथ वन जायेगी ? राजा जनक की साङ्गिनी भी बनवासिनो होगी ? बेटा मेरा हृदय बड़ नहीं है जो ऐसी बातें सुन सके । जो सिरीष के फूल की तरह कोमल है । भूल कर भी जिसने कभी धरती पर पाँव नहीं दिया है । जो सदा मोद और पातलों में पसी है । जिसे मैंने धीरे धीरे पुतसो बना कर रखा है ।

जिसे कभी बीपक को बली हटाने को भी नहीं कहा है । वह
 वह मेरी चाक़िरन ज़ंमसो में मारी मारी फ़िरेगी ! मैं नहीं
 सुन सकती राम में नहीं सुन सकती !

भ्रूँझिती होती है । राम हाथ का सहारा देते हैं । सीता प्र'बल
 से हुषा कपटी है ।

पर्दा

रघुनाथान
सितम्बर १९१९

पञ्चवटी

राम
बासन्ती

मट

मयोध्या के महाराज
एक वनवासिनी, सीता की सखी

गोदावरी छट पर अस्तव्यस्त

दिन का पहला पहर

आकाश से विमान उतरता है । विमान पर महाराज रामचन्द्र बंटे बिछाई बैठे हैं । नीरे नीरे विमान पृथ्वी पर आ जाता है । राम विमान से उतरते और इधर उधर देखते हैं ।

राम

यह तो वही स्थान है । मेरे जीवन का सबसे बड़ा पुण्य तीर्थ । यज्ञ को बीया सेने से पूर्व तीर्थ-स्नान का युरु वनिष्ठ का आदेश है । मैं समस्त तीर्थों का स्नान कर आया तो भी अन्तर की प्यासा तो बीसी ही षग रही है । रोम रोम फु का आ रहा है । अपने इस पावन तीर्थ में स्नान किये बिना उससे क्या कभी निस्कार हो सकता है ? (इधर उधर देखते हैं) आह, यहाँ का वातावरण कैसा घोटल है । सपना है जैसे कोई अपूर और अन्दम सिद्धक रहा हो ।

(पालकी का प्रवेश)

वासन्ती

महानुमाब, घाप कीन ह ?

राम

(चुन नहीं बाले ह) यहाँ बाए भब में ही प्रास शान्ति
मुक्त का अनुभव करने सगे ह ।

वासन्ती

(और बास प्राकर) महानुमाब, घाप कीन ह ?

राम

(बैसकर) बासंती !

वासन्ती

(बकित होकर) घाप तो मुझे जानते ह !

राम

बासंती !

वासन्ती

घापकी भाबाब तो पहचानी हुई-सी ह । घाप कीन ह,
देव ?

राम

तुन्हीं बताओ में कीन ह, बासंती !

वासन्ती

(सीबती ह) महानुमाब याद नहीं पड़ता । क

आपको देखा अबस्य है ।

राम

हाय वासंतो ! आज तुम मुझे पहचान भी नहीं पा रही हो । मैं इतना बदल गया हूँ !

वासन्ती

मैं सोच रही हूँ । मुझे क्षमा करो महामुभाव !

राम

नहीं वासंतो, तुम मुझे क्षमा करो । मैंने तुम्हारा अपराध किया है । मैंने तुम्हारी साध्वी सखी को त्याग दिया है । संसार जिसका नाम मेजर पवित्र होता है मैंने उस देवी को बसंक सगाया है । वासन्तो तुम मुझे नहीं पहचान रही हो सो टीक कर रहा हो । मैं पापी राम इसी योग्य हूँ ।

वासन्ती

(केवल अस्मित भाव्य पर प्त्वाय दे जाती है और आश्चर्य व्यक्त होती है ।) रामचन्द्र— आप रामचन्द्र हैं ! मेरी प्यारी सखी सीता के स्वामी रामचन्द्र !

राम

वासन्तो, मुझ पापी को उग देवी के साथ याद मत करो ।

वासन्ती

(चुपची नहीं) अरे, कहा गया आपका वह दिव्य कर्म

घाप तो बिल्कुल पहचाने नहीं आते । न वह काँति न वह घोमा,
न वह बस— बाह ! घापका खरोर तो एक दम काँटा हो गया
है ।

राम

यह कुछ नहीं है बासँती ! यह मेरे पाप का एकाँस भी
प्रत्यक्षित नहीं है ।

बासन्ती

कैसा पाप ? आपने कौनसा पाप किया ?

राम

तुमने क्या नहीं दिया । तुमने सुना नहीं बासँती मैंने
तुम्हारी सीता को त्याग दिया है ।

बासन्ती

(स्वरग होकर) घाप क्या कह रहे हैं ? सीता को त्याग
दिया है ? श्री श्रीर घोमा को उस मूर्ति को त्याग दिया है ?

राम

हाँ ।

बासन्ती

(स्वरग हो जाती है । उसकी धारणा नहीं निकलती है)

राम

बुध क्यों हो गई, बासँती ? मुझे पिकारो न ।

वासुन्ती

भाप कहते हैं, भापने सीता का त्याग कर दिया है ?

राम

हां यही बहूठा हूँ ।

वासुन्ती

किस अपराध पर ?

राम

प्रयोष्या के महाराज राम एक प्रसती को बर कीसे रख सकते थे ?— बोसो ।

वासुन्ती

क्या कहा ? सीता प्रसती ! संसार में पवित्रता का प्रादय स्थापित करने यासो सीता प्रसती !— नहीं कसो नहीं भापको भ्रम हुआ होगा ।

राम

देवि, तूम ठीक कहती हो ।

वासुन्ती

क्या ठीक कहती हूँ ?

राम

सीत कभी प्रसती नहीं हो सकती । वह यम-दूम की तरह

पवित्र है।

बास्मती

परन्तु माप तो धनी कुछ घोर कह रहे थे।

राम

बसन्ती देवी! तुम नहीं जानती। तुम बनबासिनी हो। तुम भोली हो।— भयर तुम जान पातीं कि राम के दो रूप हैं।

बासन्ती

क्या कह रहे हैं महाराज!

राम

देवी मैं कह रहा हूँ मेरे दो रूप हैं। एक रूप मैं मैं महाराज हूँ। दूसरे रूप में मैं रामचन्द्र हूँ। पहले रूप मैं मैंने सीता को धरती माना है। कस्तुरिणी माना है। उसे त्याग दिया है। बनघोर बन में हिंस्र पशुओं का बोधन करने को उसे छोड़ दिया है। दूसरे रूप में मैं उसकी धाराबना करता हूँ। मैं उसे निरपराधिनी मानता हूँ। उसके लिए पत-विन रीता हूँ। स्वप्न में उससे मिलने के लिए सपनाता हूँ। उसकी एक भयक पाने के लिए अपना सर्वस्व छोड़ सकता हूँ। उसकी धार मैं घरोर का लून सुखा दिया है।

बासन्ती

मैं कुछ नहीं समझती महाराज ।

राम

राजा के पास हृदय नहीं होता, न्यायवण्ड होता है। उसके प्राँसे नहीं होते, काग होते हैं ।

बासन्ती

मैं नहीं समझती महाराज ।

राम

महाराज के कर्तव्य का मैंने पालन किया है। प्रजा में अपवाद कैसा रहा था कि सीता पर-भुक्त के यहाँ रहकर आई है! सुयवंधी महाराज राम ने उसे ग्रहण कर लिया है।—
कितना बड़ा अपवाद था! कैसा भयानक कर्मक था? कोई राजबंध सह सकता था ?

बासन्ती

और आपने उस पर बिश्वास कर लिया ?

राम

मैंने नहीं देखि महाराज राम ने बिश्वास कर लिया
महागज प्रजा की बात पर अविश्वास कैसे कर सकते थे ?

बासन्ती

महाराज कोई दूसरे हैं क्या ? क्या आप अयोध्या के महाराज-

राज नहीं हैं ?

राम

मैंने अपनी कहा था न बासन्ती कि जब से मैं महाराज बन गया हूँ तब से मेरे दो रूप हो गये हैं। हर एक बात का निर्णय मुझे महाराज की पर-मर्यादा के ध्यान से करना पड़ता है। राम की राम एक व्यक्ति की राम है। उसे वहाँ कोई नहीं पूछता है।

बासन्ती

तो आप कैसे महाराज हैं ? आप जानते हुए भी सचाई का समर्पण नहीं कर सकते ?

राम

हाय, मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ देवि कि लोकेच्छा के विना राजा की अपनी कोई सम्मति नहीं होती।

बासन्ती

तब तो आपकी स्थिति बड़ी दयनीय है।

राम

बासन्ती तुम मुझ पर क्रोध नहीं करती। मैंने तुम्हारी निरापराधिनी सन्धी को त्याग दिया यह जानकर भी तुम क्रोध नहीं करती ?

बासन्ती

पहले क्षीम का भाव उठा घबराय या परन्तु वह सब बिल
क़ुस नहीं रहा ।

राम

तुम्हें मेरे ऊपर जरा भी क्रोध नहीं ? तुमने मेरे अपराध
को क्षमा कर दिया ?— बोलो बोलो ।

बासन्ती

मेरे मन में महाराज की निरीहता पर क्या उमड़ती है ।
आपके बेहतर से व्यवहार हाता है कि आप कितनी भीषण
भनोवेदना लिए घूमते हैं ?

राम

बासन्ती, देखि !

बासन्ती

महाराज, प्रामद्विषट की घतउर्वासि ने तिल-तिल करके
आपको सुजा दिया है ।

राम

उस पाप की गुस्ता के घामने यह कुछ भी नहीं है,
बासन्ती ।

बासन्ती

महाराज, यह पाप नहीं है ।

राम

क्या कहा वासन्ती यह पाप नहीं है ? सीता को कर्मिनी बताना पाप नहीं है ?

वासन्ती

जब आप जानते हैं सीता पवित्र है। जब आप अपनाद पर विश्वास नहीं करते। जब आप अपनी भूमि के लिए दुखी हैं। जब आपने केवल रामकीय कर्तव्यों का पालन किया है। जब आप साधारण थे। जब आपने सीता के साथ साथ अपने हृदय की शक्ति को भी त्याग दिया है। जब आपने सीता को त्याग कर न्याय-शब्द का अपने ऊपर ही प्रहार किया है तब उसे पाप कहना कठिन है।

राम

तो इसे क्या कहोगे वासन्ती ? इसे राम का पुण्य कहोगी ? इसे राजधर्म कहागा ?— कहो, या पाहो कहो। आज राम अयोध्या के महाराज हैं उनके मुह पर उनके कृत्यों को पाप कहने का साहस कौन करेगा। राजकोप को भला कौन नियन्त्रण देना ? एक भवसा के लिए जिसका अस्तित्व कौन जाने दुनिया में शेष है भी या नहीं, राजा की निंदा करना कोई न चाहेगा।

बासन्ती

यह मत्त समझो महाराज । बनबासिनी बासन्ती का हृदय बाहर से घातपा हो गया दिखाई नहीं देता इससे यह न समझो कि यह अपनी सखी के लिए दुखी नहीं है । मैथिली के दुर्भाग्य के लिए मेरा रोम रोम रो रहा है । उस देवी को जो बलिदान में जाननेवाले के लिए मेरे धस्तर का क्यासामुखी धर्मिणियों की बर्षा कर उसे जसा जसना चाहता है—

राम

बहु नारकी इसी योग्य है, बासन्ती !

बासन्ती

परन्तु—

राम

परन्तु-परन्तु नहीं बासन्ती ! धर्मिण्य हो, कोसो ! परमात्मा तो मनाओ कि उसके जन्म अन्तः की गति उससे छोन से ।

बासन्ती

बर्षों नहीं महाराज ?— मैं जानती हूँ सखी जानकी क साय कितना धन्य हुआ है ।, उन्हें धकटनीय दुर्गों में पड़ना पड़ा, परन्तु जब देखती हूँ कि महाराज ने उन्हें दण्ड देकर अपनी को ही सबसे अधिक दण्ड दिया है तब जो मैं आपके प्रति सहा मुझति होती है । क्रोध गल जाता है, कल्याण उमड़ती है

मुझे विश्वास है, मेरी सखी भी यदि आपको इस बदा में देख पाये तो उसे रूसाई ही आवेगी ।

राम

क्या कहा ! सीता सीता मुझे क्षमा कर देगी ?— सबमूख बासन्ती यह देवी मुझे प्रबन्ध क्षमा कर देगी । उसके प्रति मैं इससे भी बड़ा अधिक धन्याय करूँ तो भी वह कोष न करेगी ।

बासन्ती

महाराज मेरी सखी के क्षीस-स्वभाव से परिचित हैं ।

राम

ऐसा मत कहो बासन्ती । यदि स्वर्णी राम क्षीस-स्वभाव की कद्र जानता यदि प्रेम का उसके निबन्ध कुछ भी मूल्य होता, तो वह सिंहासन त्याग देता परन्तु सीता को कर्मिकिनी कहकर निर्वासित न करता । राम को यम जितना प्यारा है प्रेम उतना नहीं । उसकी दृष्टि में मर्मादा सीता से अधिक सुन्दरी है ।

बासन्ती

तभी तो सुमती हैं कि पश्यमेव यश में सहस्रमिणी के श्याम पर आपने मेरी सखी को स्वर्ण प्रतिमा रखी है ।

राम

(निवृत्त रहते हैं)

बासन्ती

तुम कैसे हा रहे हो महाराज !— क्या यह आपके संताप का पर्याप्त प्रमाण नहीं है ? धीरे प्रमाण की बखरत भी क्या ? आपका चेहरे । पुकार पुकार कर कह रहा है कि अपने ऊपर कितना अरुणारुण करण आपने अपनी प्रिया को अपने से दूर किया है ।

राम

बस करो बासन्ती ! बस करो । आप, अब उस बात की याद मत दिमाओ ।

बासन्ती

(प्रथम बहलने की इच्छा से) सुनती धीरे आप यज्ञ की बीसा से रहे हैं, फिर आप यही जनस्थान में कैसे आ गये ?

राम

जनस्थान में आये बिना राम का कोई यज्ञ क्या कर्म पूरा हो सकता है ?

बासन्ती

आप अन्तसे ही आये हैं ? कुमार लक्ष्मण को साथ नहीं लाये ?

राम

प्रकृष्ट ही आया है, परंतु मेरी बात का उत्तर दो बासन्ती ।

बासन्ती

किस बात का ?

राम

यही कि मोदाबरी के तट पर जनस्थान धीर पञ्चवटी के बख्त किये बिना क्या राम का कोई यज्ञ पूर्ण हो सकता है ? यह राम के जीवन का सबसे बड़ा पुण्य-तीर्थ है जहाँ मैंने प्रिया जानकी के साथ जीवन के सबसे सुन्दर वर्ष बिताये थे । तुम्हें याद है बासन्ती के दिन जब यहीं कहीं अपने हाथों से मैथिली मुगधनों को हरो-हरी पूज कराती थी, गोदावरी से जल ला आकर अपने सगामे पोथों को सींचती थी जन-फूलों की भाँसा पूज पूजकर मुझे पहनाती थी, — बोलो, याद है या भूल गई ?

बासन्ती

(रोती है)

राम

रोओ मत, बासन्ती । धीरज धरो धीर मेरी सहायता करो । यज्ञ की बीजा मेने का मुहूर्त निश्चय है । तुम्हारी सहायता से मैं जनस्थान धीर पञ्चवटी का बर्षाग करना चाहता हूँ । मैं घबराह हो रहा हूँ । मैं भ्रमों में हो रहा हूँ । मुझे सहारा देकर मे जलो, देवि !

वासन्ती

(प्राणु वीक्षकर) प्राणये, महाराज ।

राम को हाथ का सहारा देती है और दोनों धीरे धीरे चलते हैं ।
दृश्य सरकता जा रहा है ।

राम

वासन्ती किसने वप धीठ गये परन्तु सगता है जैसे सीता
पानी पानी किसी सता-मण्डप सं निकलकर आने वाली हो ।

वासन्ती

सखी सीता के साथ आप जिस जगह रह चुके हैं वहाँ
उनकी याद आना स्वामाधिक है ।

राम

जब जब प्रिया का सिफ नाम रोप रह गया है, तब भी
यहाँ उसके पासपास ही कहीं होने की प्रतीति होती है । सब
जानते हुए भी जो यही कहता है कि मैं जाकर कुर्जा की छाया
में से उसे साब साऊँ ।

वासन्ती

(चलते चलते एक ततागृह दिखाकर) देखिये महाराज,
यह वही सतागृह है जहाँ बहुत देर तक बैठकर आपने मेरी सखी
को प्रतीक्षा की थी ।

राम

घौर बह गोवावरी से बस भरने गई थी ।

वासन्ती

हाँ-हाँ ।

राम

परन्तु उड़ते हुए हंसों को देखने में ऐसी रस गई थी कि मैं बैठा राह देख रहा हूँ यह उसे एकदम बिसर गया था । जब लौटी तो घपराघिनी की भाँति हाँस बाँस कर मेरे सामने सड़ी हो गई थी ।

वासन्ती

यह देखकर भाप हुँस दिये थे ।— महाराज तब थापका दण्डबिमान घौर ही तरङ्ग का था ।

राम

उस प्रसंग को फिर न छोड़ो वासन्ती ।

वासन्ती

(जोड़ा घोर घाले बगुजर) सो महाराज, देखो सामने पंचवटी है ।

राम

वाँसठी देखो ! तुम्हें याद है प्रिया जानकी को यह स्थान क्या था ? वह दिन कितना भाग्यवान था जब प्यारी

बेबेही के साथ यहीं पड़े होकर पहले पहल मैंने भगवती गोदावरी के दर्शन किये थे । आज मैं धकेला हूँ !

(धाँधों में घाँसू भर जाते हैं)

वासन्ती

एक दिन फिर प्राण भेरी सखी के साथ यहाँ आयेंगे, महाराज !

राम

वासन्ती क्या सबसुख यह दिन इसी जीवन में फिर प्रायमा ?

वासन्ती

माना तो चाहिए महाराज ।

राम

एक दण के लिए वह मुझ लौट प्राये तो मुझे और कुछ नहीं चाहिए । (गहरी साँस लेते हैं)

वासन्ती

(बहाड़ी पर चढ़कर) महाराज भगवती गोदावरी की अक्षराधि देखिये ।

राम

अमाणा राम भगवती गोदावरी को प्रणाम करता हूँ ।

(हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं)

वासन्ती

असिये महाराज, सोठा तीर्थ के दर्शन करें ।

पवित्र है।

वासुन्ती

परन्तु आप तो अभी कुछ और कह रहे थे।

राम

वासुन्ती देवी! तुम नहीं जानती। तुम बतवाहिनी हो। तुम भौसी हो।— अगर तुम जान पातीं कि राम के दो रूप हैं।

वासुन्ती

क्या कह रहे हैं महाराज!

राम

देवी मैं कह रहा हूँ मेरे दो रूप हैं। एक रूप मैं मैं महाराज हूँ। दूसरे रूप मैं मैं रामचन्द्र हूँ। पहले रूप मैं मैंने सीता को प्रसूती माना है। कर्मकृत् माना है। उसे त्याग दिया है। बनभोर बन में हिंसू पशुओं का भोजन बनने को उसे छोड़ दिया है। दूसरे रूप मैं मैं उसकी धाराधना करता हूँ। मैं उसे निरपराधिनो मानता हूँ। उसके लिए रात दिन रोता हूँ। स्वप्न में उससे मिलने के लिए छत्पटाता हूँ। उसको एक भ्रमक पाने के लिए अपना सर्वस्व छोड़ सकता हूँ। उसकी याद में शरीर का रून सुखा दिया है।

वासुन्ती

मैं कुछ नहीं समझती महाराज ।

राम

राजा के पास डूबप नहीं होता , न्यायबण्ड होता है । उसके पास नहीं होती, कान होते हैं ।

वासुन्ती

मैं नहीं समझती महाराज ।

राम

महाराज के कर्तव्य का मैंने पालन किया है । प्रजा में प्रपवाद फैल रहा था कि सीता पर-मुख्य के यहाँ रहकर आई है । सूर्यवंशी महाराज राम ने उसे ग्रहण कर लिया है !—
किटना बड़ा प्रपवाद था ! कैसा भयानक कलंक था ? कोई राजवंश सह सकता था ?

वासुन्ती

घौर आपने उस पर विश्वास कर लिया ?

राम

मैंने नहीं देखा महाराज राम ने विश्वास कर लिया महाराज प्रजा की बात पर प्रविश्वास कैसे कर सकते थे ?

वासुन्ती

महापति कोई दूसरे हैं क्या ? क्या आप भयो

राज नहीं है ?

राम

मैंने अभी कहा था न बासन्ती कि जब से मैं महाराज बन गया हूँ तब से मेरे दो रूप हो गये हैं। हर एक बात का निरर्लभ मुझे महाराज की पद-मर्यादा के ध्यान से करना पड़ता है। राम की राम एक व्यक्ति की राय है। उसे वहाँ कोई नहीं पूछता देवि

बासन्ती

तो आप कैसे महाराज हैं ? आप जानते हुए भी सबाई का समर्पण नहीं कर सकते ?

राम

हाय, मैं तुम्हें कैसे समझऊँ देवि कि सोकेन्द्रा ने सिवा राजा की अपनी कोई सम्मति नहीं होती।

बासन्ती

तब तो आपकी स्थिति बड़ी दयनीय है।

राम

बासन्ती तुम मुझ पर क्रोध नहीं करती। मैंने तुम्हारी निरापराधिनी सभी को त्याग दिया यह जानकर भी तुम क्रोध नहीं करती ? -

बासन्ती

पहल खोन का माध उगा प्रबन्ध था परन्तु वह सब बिस
कुस नहीं रहा ।

राम

तुम्हें मेरे ऊपर बरा भा क्रोध नहीं ? तुमने मेरे अपराध
को क्षमा कर दिया ?— बासो बोसा ।

बासन्ती

मेरे मन में महाराज की निरीहता पर दया उमड़ती है ।
आपके चेहरे से व्यक्त होता है कि आप कितनी भीषण
मनोवेदना लिए घूमते हैं ?

राम

बासन्ती बचि !

बासन्ती

महाराज, प्रार्थना की प्रत्यूषा ने तिस-तिस करके
आपको मुक्त किया है ।

राम

उस पाद की गुस्ता के शमने यह कुछ भी नहीं है,
बासन्ती ।

बासन्ती

महाराज यह पाद नहीं है ।

राम

क्या कहा वासन्तो यह पाप नहीं है ? सीता को कसकिली बसाना पाप नहीं है ?

वासन्ती

जब आप जानते हैं सीता पवित्र है। जब आप अपना पर विश्वास नहीं करते। जब आप अपनी मूस के लिए दुखी हैं। जब आपने केवल राजकीय कठम्यों का वासन किया है। जब आप साधारण थे। जब आपने सीता के साथ साथ अपने हृदय की शक्ति को भी त्याग दिया है। जब आपने सीता को त्याग कर न्याय-दण्ड का अपने ऊपर ही प्रहार किया है तब उसे पाप कहना कठिन है।

राम

तो इसे क्या कहोगी वासन्ती ? इसे राम का पुण्य कहोगी ? इसे राजधर्म कहोगी ?— नहीं, जो चाहो कहो। आज राम अयोध्या के महाराज हैं उनके मुह पर उनके कुरवों को पाप कहने का साहस कीन करेगा। राजकोप को मत्ता कीन निमज्जण देगा ? एक प्रबन्ध के लिए जिसका अस्तित्व कीन जानें बुनिया में छेप है भी या नहीं राजा की निरा करना कोई न चाहेगा।

वासन्ती

यह मत समझे महाराज । बनवासिनी वासन्ती का हृदय बाहर से शतबा हो गया दिखाई नहीं देता इससे यह न समझे कि वह अपनी सखी के लिए दुखी नहीं है ! मैथिली के दुर्भाग्य के लिए मेरा रोम रोम रो रहा है । उस देवी की घोर विपत्ति में डालनेवाले के लिए मेरे भ्रमर का ज्वासा मुली धमिसापी की बर्षा कर उसे बसा डालना चाहता है—

राम

बहु नारकी इसी घोष है, वासन्ती !

वासन्ती

परम्तु—

राम

परंतु-वरम्तु नहीं वासन्ती ! अभिघाप हो, कौसो ! परमात्मा से मनाओ कि उसके जन्म त्रामास्तर की दार्ति उससे छोन से ।

वासन्ती

क्यों नहीं महाराज ?— मैं जानती हूँ सखी जानकी के साथ कितना अनर्घ हुआ है । उन्हें अकल्पनीय दुर्घों में पड़ना पड़ा, परम्तु जब देखती हूँ कि महाराज ने उन्हें दण्ड देकर अपने को ही सबसे अधिक दण्ड दिया है तब जो मैं आपके प्रति सहा भुभूति होती है । आप मन जाता है, कसूया उमड़ती है।—

२०]

मुझे विश्वास है, मेरी सखी भी - यदि आपको इस दशा में देख पाये तो उसे हसार्ई ही पायगी ।

राम

क्या कहा । सीता सीता मुझे लमा कर देवो ?— सबमु वासन्ती वह देवा मुझे प्रबधय लमा कर देवी । उसके प्रति इससे भी बड़ा अधिक अन्याय करू तो भी वह क्रोध न करें

वासन्ती

महाराज, मेरी सखी के शील-स्वभाव से परिचित है ।

राम

ऐसा मत कहो वासन्ती । यदि स्वर्गी राम शील-स्वभाव की कर जानता यदि प्रेम का उसके निकट कृष्ट भी दूर्य होता तो वह सिंहासन त्याग देता परन्तु सीता का कर्त्तिकी कहकर निर्वासित न करता । राम को यम मित्रता प्यारा है प्रेम उतना नहीं । उसकी दृष्टि में मर्त्या सीता स अधिक सुन्दरी है ।

वासन्ती

तभी तो सुनती है कि पद्ममेव यत्र में सहस्रमिणी के स्थान पर आपने मेरी सखी को स्वर्ण प्रतिमा रखी है ।

राम

— (निरन्तर रहते हैं)

वासुन्ती

कुप कैसे हो रहे हो महाराज !— क्या यह आपके सताप का पर्याप्त प्रमाण नहीं है ? घोर प्रमाण की बखरत भी क्या ? आपका बेहूरा पुकार पुकार कर रह रहा है कि अपने ऊपर कितना धर्यावार करके आपने अपनी प्रिया को अपने से दूर किया है ।

राम

बस करो बाबंती ! बस करो । घोक, अब उस बात की याद मत दिसाओ ।

वासुन्ती

(प्रसन्न बचलने की हृष्टता से) सुनती यो आप यज्ञ की वीरता से रहे हैं, फिर आप यही जनस्थान में कैसे आ गये ?

राम

जनस्थान में आये बिना राम का कोई यज्ञ क्या कभी पूरा हो सकता है ?

वासुन्ती

आप अपने ही धाय हैं ? कुमार सहमण को साथ नहीं लाये ?

राम

अकेला ही आया है परंतु मरी बात का उत्तर ने

वासन्ती

किस बात का ?

राम

यहो कि गोदावरी के तट पर बनस्वान और पञ्चवटी के दर्शन किये बिना क्या राम का कोई यज्ञ पूर्ण हो सकता है ? यह राम के जीवन का सबसे बड़ा पुण्य-तोष है जहाँ मैंने प्रिया जानकी के साथ जीवन के सबसे सुन्दर वर्ष बिताये थे । तुम्हें याद है वासन्ती वे दिन जब यहीं कहीं अपने हाथों से मैथिली मृगछीनों को हरी-हरी दूब चघतो थी, गोदावरी से जल सा-जाकर अपने सगाये पोषों को सींचती थी, वन-फूलों की माला पूष पूषकर मुझे पहनाती थी, — बोलो, याद है या भूल गई ?

वासन्ती

(रोती है)

राम

रोओ मत, वासन्ती । धीरे-धीरे मेरी सहायता करो । यज्ञ की बीजा सेने का झूठ निकट है । तुम्हारी सहायता से मैं बनस्वान और पञ्चवटी का दर्शन करना चाहता हूँ । मैं भयानक हो रहा हूँ । मैं भयानक हो रहा हूँ । मुझे सहारा देकर मे बसो, देवि ।

वासुन्ती

(धाँसू बौधकर) माइये, महाराज ।

राम की ह्राप का सहारा देती है धोर दोनों बीरे बीरे चलते हैं ।
हम्य सरकता जा रहा है ।

राम

वासुन्ती कितने वर्ष बीठ गये परन्तु सगता है जैसे सीता
धमी धमी किसी सता-मण्डप से निकसकर घानै वासी हो ।

वासुन्ती

सखी सीता के साथ घाप जिस जगह रह चुके हैं वहाँ
उनकी याद घाना स्वामाधिक है ।

राम

धब जब प्रिया का तिर्क नाम छेप रह गया है, तब भी
यहाँ उसके घामघाम ही कहीं होने की प्रतीति होती है । सब
जानते हुए भी जी यही कहता है कि मैं जाकर कुर्बों की छाया
में से उसे साथ सार्क ।

वासुन्ती

(चलते चलते एद सतागूह रिखाकर) देखिये महाराज,
यह यही सतागूह है जहाँ बहुत देर तक बठकर घापने
की प्रतीसा की थी ।

१२४]

राम

धीर वह गोदावरी से जल भरने गई थी ।
बासन्ती

हाँ-हाँ ।

राम

परन्तु उड़ते हुए हँसों को देखन मैं ऐसी रम गई थी कि
मैं बैठा राह देज रहा हूँ यह उस एकदम बिसर गया था ।
जब सौटी तो अपराधिनी की भाँति हाथ बांध कर मेरे सामने
पड़ी हो गई थी ।

बासन्ती

यह बैसकर प्रायः हँस दिव्य थे । — महाराज तब घायक
दृष्टबिमान धीर ही तरह का था ।

राम

उस प्रसंग को फिर न छोड़ो बासन्ती ।

बासन्ती

(चौड़ा धीर प्राणी बगुलर) सो महाराज, देखो सामने
पंखवटी है ।

राम

बासन्ती देखो ! तुम्हें याद है प्रिया जानकी को यह स्प
कितना प्रिय था ? वह दिन कितना भाग्यवान था जब प

दीदी के साथ यहीं बड़े होकर पहले पहल मैंने भगवती गोदावरी के दर्शन किये थे । आज मैं वही हूँ ।

(घाँसों में घाँसु भर जाते हैं)

वासन्ती

एक दिन फिर भाव मेरी मतो के साथ यहाँ घायेंगे, महाराज ।

राम

घायेंती क्या सम्भव वह दिन इसी जीवन में फिर घायेंगा ?

वासन्ती

माना तो चाहिए महाराज ।

राम

एक क्षण के लिए वह मुझ सीट घायें तो मुझे धीर कुछ नहीं चाहिए । (पहरी लात सेते हैं)

वासन्ती

(बहाड़ी पर चढ़कर) महाराज, भगवती गोदावरी की अमरगिरी देखिये ।

राम

अमागा राम भगवती गोदावरी की प्रणाम करता हूँ ।

(हाथ जोड़कर प्रस्ताव करते हैं)

वासन्ती

असिये महाराज, गोना तीर्थ के दर्शन करें ।

राम

(चलते चलते) वासुदेवो इधर देखो इन्हीं कुलों की छाया में कहीं घपनी पर्यंकुटी थी !

वासुदेवी

पर्यंकुटी के द्वार के सामने वाला रसाम अब तक सड़ा है । इसी छाया में मेरी सखी बँटवार घपने मोरों का नाच देखती थी ।

राम

इसी स्फटिक छिन्ना पर प्रियाने साध मैंने जितनी बार वन को छोड़ा देखो थी । भावक प्रकसे ही बीड़ी केर बैठे नु ?

□

(बैठते हैं)

वासुदेवी

महाराज, मेरी सखी ने जिन मृग-छोनों को साड़-धार से पासा था वे अब तक उसे भूसे नहीं हैं । वे जब तक वहाँ आ-आकर छिन्ना को गू घते धीर कु जों में उसे सोजते फिरते हैं ।

राम

(वासुदेवी यह पशु-पट्टी घम्य है जो घपना प्रेम अब तक बनाये हैं । मुझसे तो बह भी नहीं हुआ । उसके विश्वास का मैंने कैसा सुन्दर बरसा दिया । (कुली होते हैं)

बासंती

महाराज इस तरह दुःखी होने से घाप कैसे देख सकते ?
यहाँ तो कण कण में घापको सखी मैथिली की स्मृतियाँ मिल
जायेंगी ।

राम

बसो घागे बसों । (उठकर चलते हैं)

बासती

महाराज, घापको याद नहीं होगा एक बार घाप इसी
समय कुज में बहीं छूप गये थे । मेरी सखी घापको खोजते
खोजते बन गई थी । कुमार सद्यमण पहले ही से बहीं पये हुए
थे ।

राम

याद है याद है बागम्नी ।— मुझे न पाकर प्रिया डर
कर मूर्छित हो गई थी । होंग में जाने पर फिर मुझे देखकर
कितना रोई थी ।— मैं बड़ा निरतुर हूँ । देने मदा उसके घामुषों
के माप गिसवाह दिया है ।

बासती

इधर चाहिये महाराज घापको एक चीज दिखाऊँ । यह
घापने पहले कभी न देखी होगी परन्तु घापको

होयी ।

राम

कह क्या ?

बासन्ती

कि धाय बिना धातू बहाये उठे देखने ।

राम

बासन्ती तुम समझती हो क्या मैं यों ही धातू ब
 आने सखी मैं अपने हृदय को भरसक रोकता हूँ । जब विवश
 हो जाता हूँ तभी—

१

बासन्ती

१ (छोटुड़ के बूझ के पात जाकर) देखिये महाराज ! १

राम

देख रहा हूँ ।

आगे बज्रर देखते हूँ । बूझ के लगे जर वहाँ वहाँ सुन्दर
 बसन्तों में राम नाम प्रकृत है जो बज्रर आगे के धूब स्पष्ट हो

११

गया है

राम

इस बसन्तों में प्रिया का प्रेम स्पष्ट हो रहा है । हाय ! ठोके
 मृमसे धीरे मेरे नाम से कितना स्नेह था ?

बासन्ती

यह इधर बिज्ररानी नी ली दिये ।

बचती]

राम

फिर घोर क्या है ? (घूमकर देखते हैं) घरे यह तो
 अनुर्मय का चित्र है । प्रिया दोमों हाथों से मेरे गले में जयमासा
 बास रही है । वासती सखी ! मुझे क्षमा करना । यह हृदय तो
 झुम्से देखा नहीं जाता । (रोते हैं)

वासन्ती

(घाँवों के घाँतु पोंछकर) ये चित्र खींचकर मेरी सखी
 अधिक दिन यहाँ न रही थी । इस तरह तो घे बाद में
 उमरे होंगे ।

राम

प्रिया जानकी के हाथ के ये चित्र प्रकृति ने कितनी शक्ति घोर
 सावधानी से सुरक्षित रखे हैं ? मैंने उसी जानकी का अपने
 हाथों से दूर फेंक दिया ।

वासन्ती

हाथों से दूर फेंकने से क्या होता है, हृदय से तो नहीं
 फेंक सके हैं ?

राम

वह मेरे बच की बात नहीं है, वासन्ती । (रोते हैं ।)

होयी ।

राम

बहु क्या ?

बासन्ती

कि आप बिना भाँसू कहाये उठे देखेंगे ।

राम

बासन्ती तुम समझती हो क्या मैं यों ही भाँसू कहाता हूँ । सब जानो सबी मैं अपने हृदय को भरसक रोकता हूँ । जब बिपद हो जाता हूँ सभी—

बासन्ती

(सँढक के पूत के पास जाकर) देखिये महाराज ।

राम

देख रहा हूँ ।

आपे बहकर देखते हैं । पूत के समे पर जहाँ जहाँ धुन्धल
घसतों में राम नाम प्रकृत है जो धरर आने से जूब स्पष्ट हो

पया है

॥ १

राम

इन घसतों में प्रिया का प्रेम स्पष्ट हो रहा है । हाय ! उठे
मुझसे और मेरे नाम से बिन्तना स्नेह था ?

बासन्ती ।

महं हपर बिजवारी भी तो देखिये ।

राम

फिर घोर क्या है ? (घूमकर देखते हैं) धरे यह तो अनुर्मय का चित्र है । प्रिया दोनों हाथों से मेरे गले में जयमाता बास रही है । बासठी सब्जी । मुझे क्षमा करना । यह हृष्य तो मुझसे देखा नहीं जाता । (रोते हैं)

वासन्ती

(घाँवों के घाँवों पर) ये चित्र खींचकर मेरी सखी पश्चिम दिशा वहाँ न रही थी । इस तरह तो ये बाद में बमरे होंगे ।

राम

प्रिया जानकी के हाथ के ये चित्र प्रकृति ने कितनी रुचि और सावधानी से सुरक्षित रखे हैं ? मैंने उसी जानकी को अपने हाथों से दूर फेंक दिया ।

वासन्ती

हाथों से दूर फेंकने से क्या होता है हृदय से तो नहीं फेंक सके हैं ?

राम

वह मेरे बग की बात नहीं है, वासन्ती । (रोते हैं ।)

बासन्ती

मैंने यहाँ साकर शर्ष महाराज का जी दुकाया । बसिये,
अब आप अरु मये हूंगे । थोड़ा विश्राम कर सीजिये ।

राम

बासंतो, राम को इस अन्ध मे बिभ्राम कहाँ ? राम ठो
राजधर्म से धंधा है यहाँ घूमते हुए भी लख-लख पर उसे अन्धनेष
यज्ञ का ध्यान था रहा है । इस दुष्ट राजधर्म ने ही प्राण
प्रिया को मुक्तसे बिसग कराया है । वही अब उसकी स्मृति
के साथ अकेले में बो धड़ी हंसने और रोने भी नहीं देता ।

(व्याकुल होते हैं ।)

बासन्ती

तो महाराज बिना बिभ्राम किये हो जैसे जायेंगे ?

राम

हाँ, मैं जसा जाऊँगा । मैं अब अयोध्या का महाराज हूँ
न ? मेरा समय बड़ा कीमती है । मैं उसे रोने-धोने में कैसे
सहा सकता हूँ ?— परन्तु बासंतो, जिस तरह तुम सीता को
साद रखे हो, उसी तरह क्या इस अन्धम राम को भी
साद रखसोगी ?

बासन्ती

राम और सीता को मेरे जीवन से कोई असर नहीं कर

सकता है ? मेरे निकट बे सबा साप रहेंगे ।

राम

बासन्ती, तुम बड़ी पुण्यात्मा हो । तुम्हारा जीवन धन्य है । जब राम सोठा के लिए तरसते हैं, जब उनमें न जाने कितने जर्मों का प्रस्तर पड़ गया है तब तुम्हारे समीप वे दोनों एक हैं — साप हैं ।

बासन्ती

महाराज के फिर एक होंगे !— मेरा मन कहता है वे फिर मिलेंगे ।

राम

यहाँ से जाने से पहले अपने इस हृदय विश्वास को मेरे मन में भी भर दो, बासन्ती ? यह पापी जीवन बहुत जस चुका है । जब इसे कुछ देर मुझ से जोने सायक बना दो ?— बना दो देवि ! (व्याकुलता का आदम करते हैं ।)

बासन्ती

मगवान् चाहेंगे तो यही होगा ।— धीरे-धीरे शरिये, महाराज ।

बासन्ती हाथ के लहारे से रामनगर को बिमान पर चढ़ा देती है ।

राम रोते हैं । बिमान धीरे धीरे ऊपर चढ़ता है ।

बासन्ती पृथ्वी पर प्रणाम करके विरती है ।

पर्दा

